

पैतृगोत : 1988

विद्यार्थी संस्करण

मोल ~~२०.००~~

पक्की जिल्द

मोल : 20.00

मुद्रक : दी यूनाईटेड प्रिन्टर्स, . .

राधादामोदर की गली, पोड़ा शहर,

र-302003

आदरजोग
दादोभाई भैरोंसिंह जी ने
धरै मान सून ।

पात्र

रंगू

माथर

मागू

मांवत

मदन

गिरवर

सरूप

पिरथी

हणमान

भादर

भावर

इन्दरो

पैलो दरसाव

[कोटड़ी रै सामे आमली रो गट्टो । ऊबड़-खाबड़ भाटां रो चबूतरो । बोल-बतलावण रो खास जगां । दिनूगै सूं लेय'र सिझ्यां ताईं हथायां रो ठावी ठोड़ । गट्टे रै सारै ई गैलो, जको रात-दिन बगतो रैबै । रामा-स्यामा रो जैत-प्लैत अर गांव में बखत काटण रो चोखी जगां । टाबर सूं लेय'र बूडां ताईं रो आणू-जाणू । गट्टे रो बातां रो नुवी छाप अर छोटी-मोटी बातां रो सांतरो केन्द्र । सुबै रो बगत । सायर गट्टे मायै बैठयो बीड़ी पीवै । दरवाजै कानी सूं टोकणी हाथ में लेय'र आवतो रंगू ।]

रंगू : (इचरज अर हरख सूं) ओ हो, सायर जी बैठ्या है के ?

सायर : (बणावटी हंसी रै सुर में) आव भाई रंगू ।

रंगू : सवारी कद पूगी ?

सायर : बस आवता ई हा ।

रंगू : बाकी कोई हालचाल है ?

सायर : हाल तो की माडा ई समझो ।

रंगू : कीकर ?

सायर : बस पूछ मत । मील रो नीकरी खोटी घणी । फोड़ा भुगतो हा ।

रंगू : किया ?

सायर : (बंङल सूं बीड़ी काड'र देवे अर रंगू उण रै बगल में बैठ'र बीड़ी तिलगा लेवै) भाइड़ा मील बंद पड़ी है । सेठां रो की बिगड़ नी । बां तो समझर है ठा नी कद मूखे । अटै तो परा माटी रा चूला है ।

रंगू : बात तो मारपी है । कमाया बिना किया पार पड़े ।

सायर : पारै मोख है, भाइडा टोकणी लेय'र कोई रे बारखे जावै तो भागवो थोड़ो-भोन घाटो पाले ई ।

रंगू : संर, हाल तो सोणा रै सरम है पण की मजंदारी कोनी । पछे झारना छोरां रै भी घा जखे कोनी । बे बेवै, बागूनी है मो ओ पगत्रोपनू । आत्र घारा बेटा कमावै अर ये गांव में टोकणी केरो, घा बात बोली नी मार्ग ।

मायर : भाइया, चोपनी-दूरी कुण देख है, सद पीम्मा आटा रो होड हवै काई ? छोरा ई टोकणी मू ई दब राह्या है नीतर देस भहारना कंवर सांव रो देह । मांनो बमावै बोनी अके पोमो भर ऊठ-गुंघारै गोंदम मचावै ।

रंगू : भैर, म्हनै तो डा है ।

मायर : मेरे मूँ के छानी है । तू तो घर-घर जावै है ।

रंगू : (घोड़ो ठेरर) बो निम्मा तो भे गुण्यो होमी ?

मायर : कुण सो ?

रंगू : बजरंग नै पीद्यों जवो ।

मायर : हा, मैं तो भँसदाबाद में गुण्यो हो । पण करा काई ? भाइया, गुस्सा तो इस्यो आयो'क बहुत काददू, पण सालो जन कोनी चालै ।

रंगू : भैर, बजरंग गो तो ई मे बी दोस नी हो ।

मायर : म्हे बद् बगावा । भहारो बेटो नालायक अर निकाम है तो म्हनै मानणू पड़मी, ई मे बेजा काई है ? अँ तो साला पीद्यों'क पग लगा दिमा ।

रंगू : मायर जी, बिया दोस धारा टाबर रो ई नी है । ई गाव रो ई बरण बिगड़यो । दाह, मार-पीट, गुंडागरी भर बदमासी— ई गांव मे ओ ई रोंयो ।

सायर : परँ आ दाह ई तो पाटियँ उतार दिया । दाह म्हे भी पी ई, पण इस्या छलमंवर बण्या कोनी ।

रंगू : अब तो काई पूछो हो, सत्या ई निकलगी ।

सायर : भाइया, करँ काई, खून रो घूट पीणो पड़ै है । नी कोई रो काण-कायदो भर नी बोई रो सरम-लाज ।

रंगू : ओ हो, कामदा री तो बात छोड़ो । मुदवा कैवा तो चोटी में बटको सो भरँ हैं । पर करत्यां काई ? दिना रै थक्को देवा हा ।

[रंगू बीड़ी बुझावै भर टोकणी लेय'र जावण साह स्यार हवै जद मांगू हाथ मे टेप लेय'र चवूतरा कानी आवै । टेप री आवाज सुन'र दोम्पू जणां मांगू कानी देखवा लाग ज्यावै जर मांगू मेहँ आवतै ई टेप री आवाज की धीमी कर लेवै ।]

सायर : ओ हो, जावो सरकार ।

रंगू : (देख'र हँसै)

मांगू : अजी सरकार तो आयोड़ी ई है, ये सुणावो, दया अचाणचुकै कठै मूँ टपन्या ?

[मांगू आलसी-आलसी मा'र गट्टे माथे बैठ ज्यावे । टेप बन्द कर'र घास सामें मेल्ल लेवे ।]

रंगू : खैर, अब चालस्यां (उठण लागे) ।

मांगू : (हाथ पकड़'र बैठा लेवे) इयां किया, म्है आया अर थे चाल्या । थोडा बैठ वो रंगू ।

रंगू : बैठ्या काम कोनी चाले । थे तो पढ लिख'र मौज करो हो, गांव री मां कोई हुबै अर कोई नी हुबै, धाने तो मतलब नी । आबो अर चाल्य जावो ।

सायर : भाइड़ा कैवे तो सांची है, सुधार अ लोग ई कर सकै हैं । आपा तो मजदूर आदमी हां । नी आये री जाणां तो नी पाछे री ।

मांगू : सुधार तो करां पण चावे कुण है ?

रंगू : चावे तो कुण कोनी, आ बात तो मत कैवो ।

मांगू : म्है तो सांची कैय रैयो हूँ ।

रंगू : (व्यंग में) सांची भी कतीक ।

सायर : भाइड़ा, खाली कैवणै सूं तो काम हुबै नी । कैवो अर उण रै सा खटो, जद की हुबै ।

मांगू : थे म्हारो मतलब नी समझ्या । आप आलो समझै वो ई सुधार क सकै, पण जकै नै सुधारा वो उण नै आप आलो तो समझै । बाध्या की रै पड़ां ।

रंगू : (मजाक में) बाध्यां पड़्या तो सुधार किया हुबै ?

मांगू : बिया थे किण बात नै लेय'र चरचा कर रैया हो ।

सायर : बात-आत की नी । आ ई गांव री चरचा । दाह, मरपीट बढमासी ।

मांगू : थे लोग षोड़ा परम्परावादी हो । हाल बी गांव नै अठारवी सदी मांय देखणू चावो । दाह, मर-पीट अर बढमासी—अ तो आज ज घरम मानी जावे ।

रंगू : बाह भाई तू भी पढ लिख'र आ बात कैवे ?

मांगू : ओ ई तो फरक है ।

सायर : कोई ?

मांगू : थे आं चीज्यां नै आठारवी सदी सूं जोड़ो, जद धाने घबम्भो हुबै, आं नै आज रै जमाने सूं जोड़'र देखूं तो म्हने अचरज नी हुबै !

रंगू : (जावण लागे) ह्यो जणा तो गई भैम पाणा मे ।

सायर : (हाथ पकड़'र बाधे) घर भाट्टा मुच, घर पइया-लिम्बा रो वान गण ।
गात तो पूछ पकड़'र जानवाला हा ।

रंगू : पण म्हने बतावो, पूछ पकड़'र कुबे मे तो कोनी पट्या । जर अ पइया-
लिम्बा वालिस्टर... रीवणदयो, बरु म्हारे बने नू दो बाप गुणग
बावो हो ।

मांगू : (हस'र) हा... हा बँबे ने ।

रंगू : म्हने अय देगो होय रंगी है नीतर दो जवाब मुनालो ।

[रंगू टोकणी घावरें कार्य मारें मेन्तर मुनकनो जावण लागे ।]

मांगू : (नेत्र घावाज मू) अरे ठेर रंगू (अर गूद जोर-जोर मू हमण लाग्यो ।)

सायर : (भोट' भीमज मू) जावण दे इण री ना बा ई इयुटी है भाइडा । टोकणी
जिदावाद ।

मांगू : यही नाई करे टोकणी । ई ने तरब घाणी ।

सायर : मागणी भी भी कोई तरब हुरे बाई ?

मांगू : हुवे किया कोनी । ये म्हें घाज पदेम मे बैठ्या हा, मीनत-मजूरी मू
घाटो-खरको कर दिया हा । भागता-भागता पेट नी भरे । घर रंगू घडे
ई घारे-म्हारे कमावोडा मू मोज करे है । ई ने बाई टा पान काई
भाव बिने है ?

सायर : हा, घा वान तो गाची है । आ तो अठे ई योगा ने वादरा बणाई अर
मोज उठावे ।

मांगू : आ ई तो देवली भी वान है । ई घर री भीर खी घर मे अर बी घर री
माचिस ई घर मे । ई री हाई बाप रो जाय ट ।

सायर : टीक है बर्ना मे मो भी घावगे पेट भरे है । कोई माई लटे अर कोई
माई पटे । ई ने तो पुरो गाव ई लटे ।

मांगू : (हंस'र) म्हें खर, ई रे मागणी मारें घेतराज नी उडावू । पण अरार
घाष जकी मुयार घाटी वान गाभी राखी, उण सिलमिले मे घंडा तोगा
री भमिका अंक नाम मावनो राखे ।

सायर : आ किया ?

मांगू : रगड़ो तो ओई है । नीव रा भाटा कावणियां तो घंडा हो लोग हैं ।
हाल आस ने मो टा नीक निमाणू लमाणू बटे है अर घारा बडूक रे
योभ सू कार्ये ने बीच राख्यो है ।

सायर : (घोडो ठेर'र) मुघार तो भाइडा घारे जेता डिछीचारी लोप ई कर सकें
है । घर ई मागणी जान री बाटे विमान'वे, काम मे रोडो घटकावे ।

मांगू : (घोडो भुभडा'र) ये हाल म्हारी मायदी वान ने पिछाणी नी । म्हें
धीच मे आ वान भी कैय देवू'क डिछीचारी लोगा रो मुघार सू कोई

मगलव भी । धा डिघी फगन पेट भग्गु रो अके नामतो है विन न
नेय'र बे किणी न मामे जाय'र गड्या हुय मके । भिसारी घायरो दे
दिवावे तो पढ्यो-लिग्यो घायरी डिघी दिरावे । घर पछे भी धा जसो
नी'के डिघी रो सनमान ई हुवे । डिघी रो होनी जलावनां, डिघी न पाजे
करना घर डिघी न फाटना—महे घणा जणां देयां है ।

सायर : पछे भी भाइडा पढ्या-लिग्या रो कीमन तो है वो म्हारली तरियां मीन
र माय खोटा तो नी मुमते ।

मांगू : देखो दोय चीज है—पढणू-लिगणू घर मुघार करणू । पढ्या-लिग्या
घणां है तो मुघार रो मोचनिया कम हैं । पछे मुघार की रो—खुरो,
परिवार रो या ममाज रो ? घर मुघार भी बंद, जद मुघार री जहल
मैमूस हुवे घर जरूरत मैमूस हुदण लारे की आधार हुवे ।

सायर : खैर, अं तो ज्ञान रो बातें है धा पढ्या-लिग्या लोगां री हैं । महे तो वो
जमानो देख्यो जद डांग खुंवे माय ई रैवती पण अब तो कुतां न भगवत
सारु ई डांगड़ी नी । काई जमानो घायो या ठीक घायो, महे तो की नी
कैय सकूं । हा, गोदम-घाड़ घर मारा-पीटी अंड़ी पैतां नी सुणी ।

मांगू : स्यात जमाने री रपतार में अंड़ी बातों रो अचम्भो तो नी होवणू
चाइजे ।

सायर : अचम्भो । भाइडा तू भी काई बळी में पूखो देव है बेटो बाप नै, बाप
घर मा नै मा नी मानै, इण सूं बड़ी बात काई हुय सक है । रावळो-
कोटड़ी घर गांव-अं तो पछे री बात है । म्हारली कंवरमाव रा किरव
तू सुण्या होसी, तेरे सूं काई छानी है । म्हारै कने तो रोज-रोज रा फुरजा
पूगता । पण करा काई ? करम रा भोग ।

मांगू : थे स्यात भावर वास्ते कैबता साम्या ।

सायर : (जोर देय'र) हा, भावर भी काई बहादुरसिंग । वो तो गांव मे अंड़ी
धमासाण मचा राख्यो है के पूरे गांव रै नाथ घाल राखी है ।

मांगू : थे जाये म्हारी बात मानो मत, पण आज जमानो अंड़ा ई लोगां रो है ।

सायर : जमानो तो खैर महे भी देख्यो है—गैले आवणू घर गैले जावणू । तू
देख, रामप्यारी आंली जमीन माथे जबरन कब्जो कर लियो, बजरंग
आप रै टावर-टीकरां नै लेवण खातर अमदाबाद सूं आयो हो घर जके
दिन जावण री तयारी कर रियो हो, उण दिन वो रो सिर फोड़ दियो,
सारला दिनां बाधा नै मरुजी कने ठोक्यो ई हो, स्टैंड पर गिरघारी
सेठ रै ढपूस मार्या ई हा, मूरजी पिरोत सूं हाथापाई करो ई हो, हरिण
वाण्यांक सार्थ देवा-लेई हुई हो—तो कोई अके किस्सा है । मांगू (जोम
में घा'र) अं तो भादर है भादर ।

- मांगू : तो जणा ये भादर रा किस्सा सुण'र आया काई ?
 सायर : ना । म्हारें तो भील बंद दूयगी नीतर घठें आवतो ई बगू ?
 मांगू : घावणू तो चाये, मेवट आ जलमभोम है ।
 सायर : जनमभोम है घर घठें घेडा किरनय हूबे, जणा ई दुग है नीतर गूंडा-
 गर्दी घर बंदमासी बठें कोनी ?

[सायर घावरी जेव मू घेक बोडी घर माचिम काड'र बोडी मिलगावें ।
 हमाल बाध्या, ऊपर में दही री तावणी मेन्हा घर हाथ में लाठी लिया मावन रा
 घावणू । घागें आगें भैम घर लार्ने टिचकागे देखनो मावन । सायर घर मांगू नै
 गट्टे मावें बाना कग्ना देल'र धोडी ताल मुणनो रैवो घर फेरु बीच में बोलण
 लागें ।]

- सावन : (मज्जाक रै मुर में) घाज कडैरा परक्या बाघो हो दोग्गू जणा ।
 सायर : (बोडी देखनो) घटै आत्र मावन आया, ये घेक फूक मार तें । म्हातें
 भी डा है तू खेन में मीजा मारें ह । हाथ में लाठी अर पार्ने
 दाल वाटी ।
 सावन : (हमण लाग ज्वाबें) म्हें ओ ये तो सदा मू ई मज्जाक करी टाकरा । तुम
 तो घणी ई मिलावो हो, पण तुक बँट कोनी ।
 सायर : जाणयो भाइया, मावन । (हमण लागें) ।
 सावन : (हमणो तो) मांगू लिया माग्योडो मू डो लिया बँट्यो है घो तो पडेमगे ?
 बो ओ गाम ।

- मांगू : (घोटी मुनकरें) म्हें गोवो हो, देवा मावन री बाणी मुणा ।
 सावन : बाणी तो सदा री हूबे, म्हारें बन्ने तो मटीड है मटीड ।
 मांगू : धारा तो मटीड भी बोला लागें है ।
 सावन : आ बान भी मू ई बँबे है नीतर भास मोग म्हनै तो 'परे-परे' बँबे ।
 मांगू : घो तो दुनिया मे डारो है मावन । धारें बन्ने खरी-खरी बाना है ।
 उणा में निठाम कम अर खराम घणू है । घाज रै मिनत री पावन
 मगनी घनी कमजोर हैक वो घारी खरी खरी बाना नै पचाव भी मरें ।
 उण नै घारी बान घटपटी अर बेनुवो लागें ।
 सायर : मांगू टीक बँबे है मावन । धारा जेडा मोग बनावि है । आत्र तो मपरो
 दुनिया यन्त्रो-चोपटी में रावो है । अटी मू मूटी अरें है घर खरी बँबेना
 रें घावन पडें है । खरी तो बो बँबे जबा रें दो फिर हूबे ।
 सावन : धरें-धरें मालवा घनी बेजा मन बँबो । म्हारो तो मुसाब बानमरंगो
 है । खरी घेक घटी मटावे नी । म्हें भी जाणू हूँ, पण कम काई धारा,
 माया बह्या माळ उडे ।

मांगू : अग, गांधी के रज्ज घाटा है कटे ? अब तो मगना मममयानि, मंग कलम बिगड है ?

सांवत : (हमेश) घों गो भाग-भाग रों निजदरियों है। म्हे तो गांधी बग १४२५०२०२० मीन माथे पाता हा। मोटो माथेनू घर मोटो पेंदू। मंग माथे के वणू।

मांगू : धा धाग भी थे हें रेंवों हां, नीतर घाज गो कुण गांधी बाबा नै पूरें ह कुण घापरें नम-धरम मुदय रिदगी जीवें। अघरज तो मोके गोपी नै तो गांधीजी रा चेसा हें भादुया है।

सायर : भादुया घाज गांधी जी गो बाई उठाव उटै। लोंग घापरें मुवारपा है दूव रेंवा है। गांधी जी गो बापदा नगवीरा मे टगरया है।

सांवत : अग भाया, म्हे समवीर री बात नी करूं। म्हे तो खुद गांधीजी के गोनी देखा, पण गांधी जी गो ममलव उणा रें सिद्धान्तों मूं है घर मूं नार्गे घें सिद्धान्त पोता है घर म्हे उणा नै निभा सगूं हूं।

मांगू : धा गोनी बात है पण गावत धारा सिद्धान्त धारे ताई है। वेंत वें जावणू, म्हेसा चरावणू घर रस्मी बंटणू—घो ई धारो काम है। जे दुनिपादारी रो लफटो नार्गे तो ठा पड़ के सिद्धान्तों माथे ठंर कतो मुदिकल है।

सायर : घर, आज कुण है जको सिद्धान्तों माथे चाले घर धा भी सांची है सिद्धान्तों माथे चाल्या सिद्धान्त ई चाले, काम तो चाले कोनी।

सांवत : (मैंम कानी देखो—मैंम पणी दूर चली गई) से भाया, अब तो बाप मैंम कठीनै नै चली जाय (सांवत तेज चाल मूं धार्य जावण लार्गे)।

मांगू : घस काई। (सावत रें लारें देखतो सो) म्हे तो खुद धा कैय रेंवा हां सिद्धान्तों माथे टिकणू दोरो है। कोई नै धापरें मैंम री चिन्ता है तो कोई नै धापरें टावरी री। सिद्धान्तों नै कठै ताई चाटे ?

सायर : म्हे भी धा ई माजूं। बात करणू सोरो घर बात माफिक बात दोरो। गांधी जी री छाप लगा रें बड़ो धादमी बणणू रो जमानो गयो। हां, उण री ओट में, से धाप-धाप रा सिद्धा सेकें हें। म्हे तो खुद गुनगुन में रेंवूं हूं—गांधी जी री जलमभोम में। धोली टोपी धाला रा कैसा म्हारें मूं काई छाना है।

मांगू : (धोड़ो ठंर रें) चलो, धा भी मजेंदार बात रेंयी। (प्रसंग नै बदलता घरा) तो भादर री खबर धारे ताई भी पूगगी काई !

सायर : (उबासी लेवतो) खबर तो भ्राय जयाय है । धर्मदाबाद भी गांव रो
 भेक थावे भर भेक जावे है । पछे मारपीट भर हुड़दंगबाजी री खबर
 तो हवाई जहाज सूं भी पैली पूर्ण हैं ।

मांगू : (कान लगाय'र सुर्ण) स्यात म्हनै कोई हेतो दियो दीखै ।

सायर : से भाइड़ा, म्है भी घरां जास्यु' । (उठ'र चालण लागै ।)

[मांगू आपरी अप्पल पैर'र घेंट नै झड़कावतो चालण लागै । सायर भी
 आपरा दोन्यु हाथ जेबां में घाल'र धीमै-धीमै कदम उठातो, झकड़-योड़ो सो माग
 रें लारै-लारै चालण लागै ।]

(धीमै-धीमै स'पकार)

दूजो वरसाव

[सिन्धिया रो बगत । डूंगर रै कारणे वेगो ई गांव माथे छावळो फिरग्यो । गांव रो बस स्टैंड । पांच-मात चाय-पाणी रो दूकानां । सगळीं दूकानां सार्थे घाप घापरी मौज में मिलताह लोगों रै साथे जम्या-बैठ्या लोग । चाय रो मनवारां । बसां रो घावणू-जावणू । नुवा सोगा सूं मिलण रो फगत भेक ई केन्द्र-बस-स्टैंड । गांव री राजनीति रो खास ग्रहो । सड़ाई रो घर । सारा फंसला बस-स्टैंड माथे हुवै तो सारा मामला बस-स्टैंड माथे उळ्ळै । बस-स्टैंड माथे हमेस नुवी-नुवी बाता, नुवी-नुवी धमकी अर नुवां-नुवा सांग । घालै गांव में बस-स्टैंड री हलगत री मोली आकरी बरबा ।

स्पात ई गांव मे भंडो कोई ई हुवै जको थोड़ी ताल बस स्टैंड री राजनीति में हिस्सो लेवण मा कान लगावण नी आतो हुवै । बस-स्टैंड माथे आयां बिना कई लोगा रै रोटी नी जरै तो कई लोगा नै भावैई नी । जको गांव मे कठै ई नी मिलै, वो स्टैंड माथे जरूर मिलसी । कई लोगां नै स्टैंड सूं नफरत तो कई लोगां रो सगलो दिन बस-स्टैंड माथे ई कटै ।

सरूप री नुवी-नुवी दूकान । लाभ्ही-लाभ्ही भूँछयां अर करडूस में तप्पोडो सरीर । ग्राहक री नी पिछाण तो नी गरज । बाता रा दमगजा अर गाळयां री रल-कार । उण री दूकान माथे भदन, गिरघर अर मांगू बैठ्या चाय पीवै अर गाव भावत बतळावै]

मदन : (चाय री चुस्की लेवतो) मयू, देख्या ना तमासा बां गिरोत जी रा ।

गिरघर : भ्दाने काई कैवै है, म्हारे सूं की ई छाना नी । ओ तो गांव ऊदा नगरी है—अठै कुण कोई रो सगो है, म्है जाणा हां ।

मदन : पण मारत्यो भाई साधो, मारत्यो भाई साधो सूं थोड़ी काम बर्तै है । आज यार कुण कोई रो दवेस है ।

मांगू : (चाय रो गिलास हेटै मेलहतो) दवेल आळी बात तो सांची है पण भादमी थोड़ी साज-सरम तो राखै ।

मदन : साज-सरम ?

मांगू : तू बावलो है काई ?

मदन : साज-सरम राख्यां, ई गांव में सार्वे काई । ये म्है आज गांव सूं कोसां

दूर बैठ्यां हां, धार-निवार भाग्यर टावरों वाग्यर अठं धावों हां । लोग
अठं ई उल्लू बणार्या अर मौज उडार्या है ।

गिरवर : मौज ! पूछे मना ।

मदन : बिया तो घरवार घंड़ी मौज नै ।

मांगू : मौज तो भाई मौज है । या धार-धार पाये नी जय ।

मदन : घापां तो घापणी ह्यूटी मे ई मग्न रैवां हा ।

मांगू : बयू, गाव मे रैवे, ये भी ह्यूटी निभावे है ।

गिरवर : (हम'र) हा, ह्यूटी तो कर ई है । धोर नै बँवे लाग अर साटुवार नै
बँवे जाग । या कम ह्यूटी है बाई ?

[तीनों हमण लाग ज्वावे । रूप भी हसको-हसको खाना मे ध्यान लगा
निवे धर ओक घाटक नै हाथ रें इमारें मू घायली दूबान भाथे जावण रो बह
देवे ।]

रूप : ये ई ह्यूटी नै कम मन ममग्यो । भला मे भया अर बुरा मे बुरा ।
दोग्युं हाथा मे पाइ ।

मदन : (गरदन हिलाबनो) देख्वा के सरूप भी भोली बानी ।

रूप : भोला तो मूर्ख बोई नी लागवा । सगला दिडववा बुवा रो पाणी
पीयोइ है ।

गिरवर : धर भोला मू धो मतलब नी । जको धाज गाव नै जलज्यो, बां मरी
भायना मे समझदार हज्यो । धर जको धाज भी या नेलावा नै
बबर मे बड़यो को साव रुज्यो ।

मांगू : नेलागिरी रो धाज सगला मू मोटी खामियत है ।

रूप : म्हारा बापजी, क्या री खामियत है को तो धयो है । जका नेलागिरी
री टाग-मूछ बानी जाली वे नेला बणार्या है ।

मांगू : जको टाग पूछ जाली को नेला बोड़ी हवे ।

रूप : तो उण नै बाई बीबा ?

मांगू : को समझदार हवे । नेलागिरी धर समझदारी रूप-रूप रो बावे ।

गिरवर : और, नेला मे समझदारी तो हवे रण बा हवे दुआ नै उणू बबरब
री । ई री भाव जको जको हज्जियार हज्जियार को बने ई बरो नेला
बनली ।

रूप : मरी का बात जयें तो है । उरब जी रो जम्ह बाई है ?

मांगू : उण नै सोच नेला बावे है ।

गिरवर : (और देख'र) बावे बई, पूवे ई उण नै । पूवे मू नेला री-गला लगे
उण री बँड के दरदार लगे है ।

- मांगू : नेता री पिछाण ई आ हैके उण रै साथ हरदम दो-ब्यार जणां रै
अर हां में हां मिलावै ।
- गिरवर : हां, आ जरूरी है ।
- मांगू : नेता सच्चो बो जको दिन नै रात बतावै अर रात नै दिन । जको
गरीब रै नी अमीर रै साथ रैवै जको न्याय रै नी अन्याय रै
साथ रैवै ।
- मदन : [हुंकारो देवतो] हां ईं रुख सूं ईं नेतागिरी जमै अर निखरै ।
- सरूप : सांच रै साथ होय'र खावै भी काई ?
- मांगू : अरे सांच रो साथ देवै जणां नेता बणै ई क्यूं ? राजनीति गंगा रो
पवित्र जल नी जठे आत्मा निरमल हुवै आ तो दारू री बोतल है
जिण सूं सरीर मांय ताकत बावई अर पछे आख्यां रा डोरा
साल हुवै ।
- गिरवर : [बात रो आणंद सेवतो] है तो राजनीति आ ई भाई । मल जी रो
बेटो इन्दरो सरपंच रा चुणावां में जीत्यो अर पछे देख्यो उण रो रंग ।
आकोता री सगली जमीन झाबली, चीणी रो कोटो आपरै भतीज
गुमान नै दिरा [वियो, पट्टा माय पट्टो बणा'र गांव में भोबर बिखेर
दी अर अब घाणै अर तसील रो डर दिखावै बादवाकी ।
- सरूप : [सूँछा पर हाथ फेरतो] इस्या सरपंचा सूं तो कोनी डरां ।
- मदन : [समझावतो सो] अरे तन्न थोड़ी डरावै पण गरीब री तो
बिगाड़ देवै ।
- मांगू : ईं रो कारण है । नेता गरीब री इमदाद भी करणू चावै बो फगत
आपरो रोब दिखावै अर दुकान जमावै ।
- सरूप : [हंसण लाग ज्यावै] तो जणा म्हारली तरियां नेता जी भी दुकान-
दार हुया ।
- गिरवर : [हां भरतो] दुकानदार भी कित्या । चीज्यां राखै पण बेचै नी ।
सगली चीज्यां माय पड़दो राखै । अरे ईं दुकान में सोक्यूं मिले ।
भीठी गोळी, दरद री गोळी, थोड़ी सारी गोली, नसैरी गोली अर
बंदूक री गोली ।
- मांगू : हां. नेता तो रामबाण दवा है । आज मन्दिर में जावणू जरूरी नी
पण नेता सूं जेठम जी री राखणी जरूरी है । नेता राजी तो पछे
भलाई दुनियां बेराखी । जे सिर माय नेता रो हाथ तो पछे मारां
दुनियां रै सात ।
- सरूप : हां, भाई कलबुस रो लुना नेता ।

- मदन : खुदा नो बदगी कर्या को देवे पण नेना तो फगन नेवे ई लेवे ।
- गिरवर : हा मर्या खानी बोट ई ना । ममभग्यो ना ।
- मर्या : ममभग्यो, अना भोवो घोडो हुँ ।
- गिरवर : जको देवणू भोवग्यो, वो भोवो कडे ? ई वालां म्हुने तो लागेवे जनना भोळी नी ई बा नेना मू अके कदम भागे है पण मोको पडपा नेना रे मारे है ।
- माँगू : मोरी तो लैर भावे घर चन्दां जावे । नेना थोडो ममभदार हुवे, वो उगने घोडो खणाय रे उण मावे सवार हुय गयावे ।
- मर्या : पण बारजी घोडा मावे चढणो सामान नी ।
- माँगू : आ कुण कही ?
- गिरवर : घोडो भी कंडो भागनो हुयो ।
- माँगू : हा, मोको घंडो ई भाग तो घोडो है त्रिणगी सवारी दोरी घणी । इन रे सवार नै ई घमनी नेना कवे ।
- मर्या : ठीक कही । कडे सवार बणने रा नाफडा तो पीटे पण सुलसंधी ला गयावे । नेवरी भावा भोम जी नै हेतो पड-गुड रे भी आज ताई सवार नी हुया ।
- मदन : घरे दार छोड बा री बात, बा नै तो नो घोडा री पिछाण घर नी गया री । घोडो ममभर गये मावे चढग्य घर वो लात बाई तो उण नै हुडन-टुटत कर दिओ ।
- मर्या : मतनव ओक घोडे री पिछाण जरूरी है ।

[उणी बगन पिरधी रो आवणू । फौज री नीकरी मू रिटायर पिरधी सबे रोडबेज रो बाताक । धुन्धलो मरीर घर मटिया रंग री पतलून । घामो कैंडीन मू ल्यापोड़ी ग्री-एकम बोनल री मूई मू निकळनी धुमडू ।]

पिरधी : [पाटिया मावे बैठनो] घरे बाबळा घोडा तेरा बाप-दादा भी देख्या हा काई ? चाय बणाय चाय । [मागू कानी देख रे] आज किण बात गी घाघळ होय रेयो है । बोखो मजमो जम रेयो है ।

माँगू : [बात रे माय भिजोग पड़नो देख रे प्रसंग नै तीखै घर नुवे डग मू उठावतो] बाबळ तो कडे कोनी ? चारो तो काम ई घाघळ मवाणू है ।

पिरधी : [घोडो तमकर] जा ऊन का भस्या, बादू बात करे । भूई किण रो ब्याव त्रिगाड दियो घर किण री भैस खोल ली ।

मदन : भैम खोसल्यो, कोई पोल है, डागा छाळा नै जाणो हो ना ।

गिरधी : गा बरबर काँटे हैं, समझते कोनी ।

मदन : [घबराह बरगो] ये घर बरबर कोनी समझ्या, ये तो गुरु घरबर हो ।

गिरधी : [धोरा मुखमा बरगो] घरबर हो गो हा । घाबो माई हो लाल कोई गाली । इहे गो हातो टाँप'र बँवा हा । ये घरई में बाग बरग छाडा हुआ है ।

गिरधर : [हुं काँटे गार्धे] इहे जी ।

मांगू : [भीमो गुरु] अर तो घर परछा रेंवा ई बटे । जका घरई में हा ये ई भोग में ऊभा है ।

गिरधी : [बरग बरगो] तो इहे काँटे बेजा बही । पोडो-गाई बँवा हा घर कैवल्या—कोई ई माय दम हुवे गो ह्मावो घावरी बाल तलवार ।

मांगू : काम तलवार तो रेंई बटे ? पण बाल तलवार रो ई जमानो हो । ये लोग बाल तलवार भूँ बई करापा कोनी । मोकें भार्धे मदद करणें बालत काम-तलवार रागी ।

मदन : हा, तो बाल-तलवार रो भी नेम हो, अँक भरजावा हो । उन जमानें में हथियार रक्षक हो, भक्षक नी ।

मांगू : आज गो बाल-तलवार रो जोर कोई न मत्रावा मारु है ।

[बहल रो टेढ़ी-मेढ़ी बातों रो घरघ गिरधी रे दिमाग में नी आय रेंवो हो, की मनो भी ठीक-ठीक उगल साम्यो, बाल-तलवार रो बातों भूँ और भी जोस उमग्यो घर हँवा भी लसग्यो'क अँ लोग बाल-तलवार रो बात भूँ गिरधी रो कौम रो की काट भी कर रेंवा है गिरधी अँक-बो बार भास बढाई घर आपरें होठा पर भावती गानड़ी न भूँटे घर भांगली भूँ मसली ।]

गिरधी : घर की रा माया बाढ़ दिया ।

गिरधर : मामां बाढ्यां तो ठा भी पड़ ज्याबै । पण सालो सेर न सवा सेर मिलख्यो कोनी ।

मदन : मिलती । कुण सी सगला री नसबंदी हुयगी ।

गिरधी : [पोडो हँस्यो] अरें भाइडा तू सांची कही । कठें नसबंदी है । ई' गांव में तो काटया कुवो भरै है ।

[तीस्र हंमण लाग ज्यावै । मरुप रै कोई ग्राहक आनन मूं वो उण मूं
नकावण लाग ज्यावै । मांगू रो कोई जाणकार मोटर मूं उअर दूजान सामे धावै
वो वो उण मूं रामा-मामा वरण लागै ।]

गिरवर . छठे हाथ अवन आई नी । मो कू मँयो अर मुश्किल होरयो है छठे
मयीन बराबर चाल रैयो है ।

पिरथी . बाग मो धाई, छठे मो ज्या ई राडा गेला कश्मीर ह्या ई पावला
जीवरी ।

मदन . ग्राहो कंदणू हे'क जजाना नै दग'र चालणू चाये ।

पिरथी . [जोर मे] छठे मो अमाना नै बदल्यो है ।

गिरवर . आ बात मो मानी पण जमानू बाटै ररै—घन जावा घन लाग ।
वै लाग जी रै देखा । पूरी पलटण-गाव नै अघर उठा गय्यो है । छेक
नै हेनो देला ई मान मू डा बाटै है ।

पिरथी . बार लाग जी ला लाग जी ई ई । जद नमबडी छाळा बंदा मनाओ
जणा बार ह'यर मे बदल्यो अर पाच दिन लाई बटै ई गरी मगाइ
अर भी लाई घन मोहनो रियो ।

गिरवर . रंग मगवा ई लाग जी जैडा हूँ जणा ला बेडा बार है दग दग रा ।

[बी हन्वी-पुन्वी बाता मू पिरथी मो मगाव कम हूयो अर उण नै लाग्या व
एह्य अब लाग जी रै साथै है । मानू धान बार पाओ पाटिया साथे बार र बैठारा
अर मरुप भी बाता मे रग गेवण लाग्यो ।]

पण बी नै तलवार पान नी ओं भी ताज्जुव है । वो पार वदः
मारकणू यणग्यो ।

माँगू : पछे भी किण वान नै लेय'र तलवार ग्रामी-सामी घाई ।

पिरथी : तू जाणै इन्दरा रै घर म्हारे सदा ठणी । वो वामें तो म्है दायें ।
उण नै सदा चेनेन्ज दियो अर आज भी देय रैयो हूँ म्हारे कडोडो
हारग्यो. इण रो घोरों नी, पण जे उण री हिम्मत हूय तो घाव
मिदान में । वो रै कन्नै सरपंच री मोहर है तो म्हारे कन्नै घा तेत
पीयोडी सांत पैस्या री लाठी है । म्है घणा जणा नै रोवणूया नीम
सलोककर कादया है । इन्दरा तो म्हारे सामे कोई चिड़िया है ।

माँगू : पण म्है तो भादर वास्तै पूछूयां हो अर पारे इन्दरा गडर्यो है ।

पिरथी : [जोत सूँ] बी भादर री पूछ मरोई ई कुण है जको वो मारणू
होय रैयो है । ओ इन्दरो ई तो है नीतर भादर वापड़ा नै पूछे कुण ?
वा तो म्हारे सामे बूची है बूची ।

मदन : बाह भाई पिरथी । जको लोगां रा तो गैला बन्द कर राख्या है ।
डांग सूँ जको लोगा रा चबूतरा फोड़ नारया अर सरपंचाई री हेकड़ी
सूँ जको भागै ताई रो गैलो बतावे, उण नै तू बूची कैवे ।

पिरथी : अरै बूची ई तां है । तू चाये आ नै सरपंच रा मुरगा मानले ।

मदन : हां सरपंचाई रो मतलब ई लाठी रो जोर है ।

माँगू : जव ई तो म्है कैवू हूँ ओ प्रजातन्त्र है काई । जको खावै, पीवै, मोज
उड़ावै अर साथ ई साथे डांग पटेलाई करै, वो सरपंच है ।

गिरवर : लाठी रो जोर तो सदा ई रैयो । ठाडै रो डोको डांग नै फाड़ै ।

माँगू : ई रो मतलब ठाड रो नांव सरपंचाई है ।

गिरवर : सरपंचाई नी । कोई भी ओहदे मायें हुवो ठाड जरूरी है । ठाड में ई
ठाठ है । कैवण नै भलाई, इण नै प्रजातन्त्र कैय देवो पण प्रजा बेचारा
तो हाल ई दन्बू, डरपोक अर नेतावां रै लारै भागण आली है ।

माँगू : अर ओ तो नारो है—प्रजातन्त्र रो । प्रजा नै ठगण रो लूटण रो
अर उणनै उल्लू बणाखै रो । राज तो राज है अर प्रजा वापड़ी
प्रजा । प्रजा रो काम बोट देवणू है अर नेता रो काम डरा
धमकार बोट लेवणू है ।

गिरवर : हां प्रजा तो वापड़ी गाय है, न्याणू देत्यो अर दूइत्यो ।

माँगू : [टेढ सूँ] घंडी बात तो नी है—कदे-कदे लात-फटकार भी
दिखावै । जको खुद नै पणी मान'र दूय चावै, उणनै गाय भी

दूध नी दे घर जको गाय री सेवा करै, [धो चाये दिन में न्यार बार
बयूं नी दूध काडै ।

मदन : हा, आ तो ठीक है, गाय रें पण भी है तो सीध भी है जिस्यो दीखै,
उण मार बीम्यो ई बरताव करै ।

गिरवर : धं तो सब बँवण री बातों है । प्रजा तो बेसनयां पड़्योड़ी गाय है ।
ई नै तो मांगड़ो देयर कठी नै ई टूरल्यो । थोड़ से चाटे पर कटे
ई बुताल्यो घर दूध काडल्यो ।

माँगू : [समझावतो] घर जद ई लोगां रें चांदी होय रँयो है । बम, पाच
साल भूँ मेकर ई नै दूबै—उण बखत तो खल्ल-मुड, बाटो-पारो
घर चूरी-मतो नी काई-काई देवै, पछे तो आ गाय खुद घणी नै गोवती
घर दूदती भचीडा खाती फिरै ।

मदन : भाई, असली हालत तो आ ई है ।

गिरवर : गाय तो दयालु है, जको ई नै पुच्यारै, ई रें हाथ करै घर ई रो
टेम सिर मुष के, उण नै ई धोई पछे जे कोई दूध पीर लजावै तो
इण भूँ बड़ो दुरभाग काई कह्यो जा सकै है ।

माँगू : आ ई तो है । लोग दूध पीणू चावै, पण गाय नै चराणू अर सभावरण
नी चावै । हा बिया गाय अब थोड़ी-घणी समझदार भी हूयगी ।
सोर-सास दूध भी कोनी देवै तो लात भी फटकारै ।

मदन : म्हारै खयाल भूँ गाय जिण दिन दूध देवण भूँ पैला लाग दिखारणी
सुरू कर देसी, इण दिन देस रें मांग प्रजातन्त्र री जीत भी होसी ।

पिरयी : [मूफली रें छूतका नै परै नाखर, हाथ भड़कावण लागै । नमो
भी की अब थोड़ो रंग पकड़णू सुरू करै] अरै, किण बाग रो
प्रजातन्त्र । ओ तो भेळबाड़ है, चरग्यो मो चरग्यो घर मोई जाग्यो
जको रँग्यो ।

माँगू : [थोड़ो पिरयी री फिरती आख्या रो रंग देखर मझाव भूँ उण नै
बडावतो बँवण लागो] चारै तो घायग्यो प्रजातन्त्र ।

पिरयी : धठे तो जूती में प्रजातन्त्र रातां ।

गिरवर : जूती में तो बटवा राखता । चारी तो जूनी नोय खोगरी । अब
चपतां है—चपतां ।

पिरयी : धरै जा बावला । बँ दूजा देख जबा प्रजातन्त्र रें नाख मार्थे गेना
होय रँया है । आपां तो हाथ रागा घर हाथ भूँ ई खारा । चादे
कोई भादरसिण हूयो अर चादे कोई दूजो ।

माँगू : क्यूँ फटकात मारै । गांव मे दो दिन घावै घर खोब दिखारै ।

गिरवर : घर, लाई मैं वन में सवारी श्यारती रैव ना जणा बरै बार्द । गां
में घूंट सेय'र हेकड़ी दिशावे ।

पिरथी : घर, जा पूंगा । बस में भी देखा कोई खू तो कर सेयं ।

मदन : बस जाण दे । बठे प्रजातन्त्र है घर घठे ठाकरण ।

पिरथी : [गुम्मी में घाय'र] तो ओ ठाकरण खू उतारै है बार्द ? (गिरवो
री आँस रा डोरो थोड़ा सात हवै । उण री तेज घाय'र मैं गुम्मे
स्टेण्ड रा केई जणा घासै-पाने घा'र ऊभा हय ज्यारै ।)

मदन : ठाकरण खू भी उतरयोहो है, ई न भूट्याई सेयो रासी तो तेरी
मरजी ।

पिरथी : ठाकरण खू, मरै कौनी ममझ्यो ।

माँगू : गैर, जेवटी बन्धा पछे भी वो रो पट जाय मी । ई मे पारो होग
नी । भी कँवण खू ठाकरण खू मरै तो नी ठाकाई खू ठाकरण खू रैवै ।
अँ बलन रा मोल भाव है, ई' वान्ने जल-जल घाज ठाकर है ।

पिरथी : [जोग में घाय'र] रैगडै रै पार, क्यूँ गिर माथे पडै, पड-विगारो
ई' रो मगलख तू ई ज्ञानचन्द है बाकी तो मे भूल पातै है ।

माँगू : ई तो छूट पावया री बही बौनी । बलन खाल धूर बटा देवै ।
देगो बौनी जठे हाथी बंधना बठे घाज बचरी रो गूटो पाव मागो
है अर जठे धिसवान् मचनी बठे घाज गुनेह गोहा मोट्या बौनी है
घर जठे दृढम अर लम्मा पगी खू दिन उणरो घर दिन दूगरो बडै
हेतो पाट्या ई कोई बौनी मी ।

मदन : पण भाई, पार-इहाई बँवणी खू बार्द ? अँ तो मन मे मंजीराव है ।
सा रो तो टमकी गुगो ।

पिरथी : [कानरो ममधेन बज्या बहा] हाँ, नी गुगो, पाव मे देवखू दूरे ना
गुगो । सा पारा बा मो अँ ई मया है ।

माँगू : गैर, मान री कोई भुग बौनी, नी पाव पारो अर नी पाव बज्या ।
ले मगलख रो ई है घर मगलख बगडर है ।

- मदन : जहाँ घँ तो किणनँ जीवन देसौ ।
- गिरथी : महे किण नँ माग हा, मैं जागरा करमा मूँ मरँ है ।
- माँगू : कस्य री नो कुण बँवै । किमोर रो मिर कुण फोड़्यो ? मुमेर रै जूना कुण मार्या घर मरगन दरजी री मर्या बजार में बेइजती कुण बनी ? कोई री भँम भुम ज्याय है नो कोई री बकरी बाध लेवे है नो कोई किण री जमीन दाब लेवे है ।
- गिरथी : घँ तो मदा मूँ होना घापा है, घाज कुण नो नुची होय रँपी है ।
- मदन : घाज होय रँपी है, आ ई नुची है ।
- गिरथी : घाज काई है ?
- माँगू : प्रजातन्त्र ।
- गिरथी : प्रजातन्त्र है तो चडाद्यों म्हानँ मूळी पर । बी री मा लाडू गाय'र इग्यो जायो हँ, धीर नँ मर्या तो ।
- माँगू : हँ । कइया री तो बाल टाग रागी हुँवपी ।
- गिरथी : नी टाग रागी तो अब टागद्यावा, काई थोस बोस हँ ।
- गिरवर : ल्यो छोछो मार, काई राग्यो हँ, ईँ थूक बिलोवा मे ।

[अँकर लगला थुप हो ज्यावँ । माँगू दूजी कानी देखण लागै । मदन मरग्य रा भँमट कानी ध्यान देवँ घर गिरवर भी माँग ईँ माय मुलकबा लाग ज्यावँ । गिरथी नँ लागै ईँ छेड़छाड़ में की खास मजो नी घायो माँगू, मदन घर गिरवर रँ अँक होवण मूँ गिरथी री पणी बली नी ।]

- माँगू : [मदन घर गिरवर कानी देखतो] तो ल्यो आवो, थोड़ा तलाब ताईँ धूम आवां ।
- मदन : हां, चालो [तीनों जणा उठ'र चालवा लागै ।]
- गिरथी : [सरूप मूँ] से यार प्यादे अँक चावड़ी ।
- सरूप : [सुस्ती हटावतो] ईँ रै ऊपर चाय चलेगी काई ? [हँसण लागै]
- गिरथी : [हँसतो] अरँ कठै नसो है, उवरगी यार । देह्या ना प्रजातन्त्र रा हिमायत्यां नँ । दुनियां ठा नी किण रँ माय गँली होम रँपी है ।
- सरूप : सँ आप रँ हिसाब मूँ सोचँ है । अँक दूजा नँ सँ गँला लागै है । म्हनँ पे अर चाने म्हे । दुनियां रो छो दे डारो है ।
- गिरथी : [चाय री गरज करतो सो] अरँ ठीक है, गँलो तो कुण है ?

पण ई गांव में तो आपणी चलसी । आपणै सटूठ री चलसी घर
आपणा भानां-कानां री चलसी ।

सरूप : तो जणा चाय भी चलसी ना ।

पिरथी : चलसी रे भाया, तेरी चाय वास्तै तो घर री चाय छोड़'र घाया ।
पण आता ई मां भूसळचदा तू पालो पड़ग्यो ।

[पिरथी घीमै-घीमै चायरी चुस्की लेवण लागै । थोड़ो अ'धेरो भी बँ
अर लोग आपरै घरां कानी बूकण लागै ।]

(घीमै-घीमै अ'धकार)

तीजो दरसाव

[रात री पैलो घोर । आकाम रै भाय मदरी-मदरी ज्यानणी रो मुहावण प्रकाम । रात रै मैफिल रो ठावी ठोड आमली रो गट्टो । ज्याम्मेर सूनेड पण घरा रै भाय बायर-टीकरा रो रोलां एप्पो अर रोटी जीम'र गट्टुं माथे हधापां साट घावना लोग । दिन भर री घापरी राम बहाणी तो गाव रै भलै-बुरे काम री चोखी-माछी वातचीन । अक तरफ दिन भर रै काम री हार सूर्थ बबयोडो डील भर दूजै बानी बाना रो मीठो चमको ।]

भायर भर सावत आपरै सुख-दुख री नै घर-परिवार री वाता मै लेपर मदरा-मदरा घनलावा हा, उणी बखन डकार लेवनो मायू भावै ।]

सायर : घाव रै मायू ।

मांगू : बैट्या हो काई ।

सायर : मई तो भाई ई बडका रै टीडै माथे ई बैट्या रेवा ।

सावत : ओं ठीक है । बडका रो ठीडो पकड्यो रैयणू चाहेंगे । बटनी नै तो आ नुकी पडी ई बिसार्या है ।

मांगू : बिसार्या तो कुण है । आदमी घापोघाप बिसर ज्यावै ।

सावत : पण क्यूँ ?

मांगू : इण रा भी की तपमुदा कारण हूवै ।

सावत : म्हारो मनलब, मिनल माथे की अँड़ी बाना भी हूवै जिननै बिसारणू मैत्र ई आसान नी हूवै ।

मांगू : [तर्क करतो हयो] बै बाना अक टीड आ'र फालनू भी लागन लागै, इण बारनै उणा नै सम्भाळणू जुन रै मुखव उबिन नी लागै ।

सावत : हरेक आदमी इणी जागर माथे पुराणा नै अंगेरणू नी चारै ।

मांगू : बिल्कुल ठीक ।

सावत : जणा घारी निजर मे इन्तियान काई है ?

मांगू : बिग्यापन या सिराणी देरण रो तकियो ।

सावत : [थोडो ठेर'र] जणा तो भाया या बामनै इन्तियान पुर-पन्तो है । बिसारणू तो तकियो भी लागै अर नी लाग्य भी नोड आग्यारै ।

[सायर, सांवत अर मागू तीनू हमण लागे सायर नै अचरज हूबैक निप दग री बात मे मागू अर सावत लाग रेया है ।]

सायर : [मागू कानी देखतो हयो] भाइया, सावन नै ओटात्या नेवण हथी नै ओटात्या नेवणू है ।

सांवत : नी, अई डी बात नी ।

सायर : तो और काई ?

मांगू : देखो, म्हे तो आज जयो की पट्यो-मुप्यो अर बी भप्यो-गुप्यो बी प्राधार माथे कैय रेयो हूँ ।

सांवत : नी भाया तू सांभी कैय रेयो है, थारो दोस नी । म्हारो भी निजू जुजरवो हूँ । आखी जिन्दगी रेत नै ससी करी है अर उण रे माथ की सोप्यो है । पण हां, की हाथ आयो है, वो कीमती है, बी री आपरी पिछाण है अर उण नै म्हे छल-कपट नी कैय सकू ।

मांगू : पण थो रे अर म्हारै मे की फरक है । हल्बोड़ी चीज नै म्हे तो सोधा । जरूरत मुजब चीज ही कीमती है ।

सांवत : [मन में की बात नै घणू विचार'र कैवतो] ओ की छोटी बुद्धि सून सोचणू है । रुंस री छीया चोखी नी लागे तो र ल बाट्यो जा सकै है पण जड़ा तो फेरु भी जमीन मे रेमी । म्हे इतियाम नै हमेन मजबुत जड़ आलो पेठ मान्यो ।

मांगू : [तरक करतो हयो] पण था थके पेड़ री बात करो वो ठेठ जड़ामूल सून सुखग्यो अर जकी चीज काम री नी हूबै, उणरो बांभ धीसणू म्हे तो बुद्धिमानी नी मानूँ ।

सांवत : तो इतियाम थारै वास्ते बांभ है ।

मांगू : माव बोम्भ । म्हारै साथे इतियाम बो ई है जयो रोज म्हारै साथे वणु अर मिटे । ओ लणनू-मिटणू म्हारो है—म्हारी जिंदगी रे ओक स्वाम बगत रो तर-तर मंगसो पड़ण आवो काल-जम है । इग रे पलावा जकी वानां माथे डोल पिटीजे, तम्बीरी बग अर गुमेज रो नमो चढ़ायो जावै, उणा नै म्हे तो इतियाम नी मानूँ ।

सांवत : भाया जद ई मैड़ी दहगी अर छपरा उठग्या ।

सायर : [की मगभना थकां] हा, या बात करी । त्यो भाइया छोड़ो प्रा वाना नै, कपां में उलभग्या ।

सांवत : नी उलझा कोनी । उलझयोड़ा नै काड़ा हा ।

[नेनी जल्म लागी । थोड़ी नाछ चुण्यो ई बीच माट रें टाडलु रो छासल । नीनु छवायलव बडी नै जान लगल लेवै । माड रें नाने किन्तो रो दहाड छर माटे ई पने इजाजतो रो दो-नौन दया आवाज]

मायल : दो दुग मो माट है ?

मांगू : [मजाक बरतो] छटे माट रें माड है । बाछडा नो रोई मे रिंगा, मा रें दउ सोवै है ।

मायल : [दुबारा बरतो] हो पैदा मो कोई जवलो ई माड हुवा करनो, घर ली-ली मे टाई है [छर करेक गद हमल लाग उवावै ।]

[माट दउ मायल भी हगे घर दानू माट कानी देगवा लागै ।]

मायल : छर पैदा भी कुल माने, मागू तो कटे रें न मानै । पैदा तो माड देखा गिणौजतो । हने माड है माडल जी बाबाजी पर माट सोइयो हो । माट जे नै दग'र छुवावा मायल पडै । डील-डोल बिचगल छर गीमा गीम । दहाडल नू पुरे पाछो बरणातो पण मजल कटे टाबर-टीबर या छटे-बडे कानी कटे गीम हिलावतो ।

मायल : [धान नै थोड़ी पगटता] भाछडा छय तो मारबणा माड घणा है ।

मांगू : [धान काटता] मारवा वलाग मे ?

मायल : मारवा तो कोनी, पण दहाडल तो गुबै नू लेव'र सिझया साई गुणै ॥ ।

सावत : [थोड़ी हग'र] छब ममसो पारी बाता । छं तो टाडवाळा साड है मा रें बाव छाशे । छं तो टाई किया—माट हा घर पाछा किया करे—गऊ न जाया हा, मा मे है ।

मायल : पण थो टाडल नी चोवो कोनी ।

सावत : काई बम चाई ?

मांगू : [थोड़ी मजाक बरतो] देखो टाडलु मे भी नुकमान कटे है । मो तो साड रो तरीयो है । थे माय बध्या मू'टे माथे ऊभा रैयसो जणा तो कोई छुम-भन्डै रो ई नी पूछे । टाट्या थोडो ध्यान तो जावै ।

मायल : छै भावा, तू पड लिय'र मोमयूँ ममभयो । जे साड टाई ई तो रोई मे जार'र कयूँ नी टाई—बन्नी मे टाडलू छीक कोनी ।

मांगू : रोई मे मुस्य कुण ?

सावत : तो थो मुभासा माट टाई काई ?

मांगू : म्हारो मनलव थो हैके टाडवा ई लोय डरै । साड घर पछे टाई नी बो तो बाछड़ो है ।

सांवत : पण सांड नै आ भी मानए चाइजे के नाम उणनै ई अकलो नी जाये
दूजा भी मांड हुय सकै है ।

सायर : [खुस होय'र] भली कही सांवत । सांड नै अतो गुमान नी राखए
चाइजे । ओ ई खोटो है, पछे भाइडा दकाळ सूं कुण सी भीता पई
है । [सायर नै थोडो जोस आवै] भै आं सांडा रै बीच में रै
रैया हा, पण देख्यो कोनी आ रो मारकपणू [बायां हाथ रै अगुई
अर भागली सूं मूछ्या नै ठोक करण लागै अर चेरे माथे भी थोडो
ताव बढ़ण लागै ।]

सांवत : [सायर री बात रो उंडो अरय समझतो हुयो] अरै छोड़ सायर,
आ बाता नै । अ सांड तो म्हारा जाण्या-पिछाण्या है । आ बापडा में
कठै दम है । खासी होकलो दिखादयो अर बाजार में आ रै साकळ
घालदयो ।

मांगू : अ तो चाटमाळा सांड है ।

सायर : [हसतो हुयो] आ चाट ई तो दिन घालै है । चाटो अर चटावो—
ओ ई सगळं होय'रैयो है ।

सांवत : [मजाक करतो] भाया चाट सूं सै राजी है—भगवान भों बिना
चाट के खुस नी हुवै, पछे आज रै जुग में तो छोटै नै छोटी चाट अर
वडै नै बड़ी चाट ।

मांगू : [मजो लेवतो] अजी ओ कळजुग नी चाट जुग है । चाटें सों लाटें ।
पछे चाट भी भात-भात री है । सगळ्या री घाप-आप री पसंद ।

सांवत : पण काई करै मिनख री मजबूरी है ।

मांगू : बम मजबूरी ही चाट है ।

सायर : चाट में ई ठाट है ।

मांगू : ओ आज रो जुग घरम है—दूगो अर ल्यो, खावो-गुआवो अर घावो
काम बणावो ।

सांवत : [स्थिति नै थोड़ो मन में गोख'र] गंगा उल्टी बैबण लागी ।

मांगू : नी म्हनै तों नी लागै ।

सायर : ये हाथ टावर हो, कानेज मूं निकल्या हो । याने हाथ बिदगी रो
काई ठा ? ये कैंवो, वा म्हनै मंजूर है पण जायज काम रै याने भी
चाट । आ साब बोदो अर गळन बाव है । काम रो तनया मिनै,
पछे नूकन री चाट की बात री ?

मांगू : आ लाग है—चाये सरकारी काम ठुवो या गैर सरकारी । तों
मगता ज्यू हाथ पसारै, नूसा ज्यू जीभ लगनवाई अर बिना चाट
सोथें मूं बान नो करै ।

- सायर : खैर, भाइदा, या तो सगळी दुनिया मे है। . . .
- मागू : [यावन कानी मुड'र] ये जकी बात केवो, वा आदर्शवादी घणी है। लोग केवे बयू, अर करे बयू, या तो आज मामूली बात है अर इया कर्या विना पार भी नो पडे।
- सांवत : तो गाधी जी रो सगळी बात आदर्श ही काई ? मांच हर जुग मे मान रेयो है अर साच नै सगळा काई। आज काई साच रो कीमत नी। अब साच रो बात आदर्श लागे, या म्हारे तो कम जचे।
- मागू : म्हारो मतलब ओ है'के साच आज भी आपरी ठोड़ है वण मांच नू काम दिगई घर भठ यूं काम मुघरे। ई वास्तू भूठ जरूरी है— चाये नेता हुबो, या कचेडो हुबो।
- सायर : [हुंकारो भरता] समझिया भाइदा, आज भूठ रो इज्जत अर भूठ रो चल है।
- मागू : ई वास्तू भूठ सीलो, भूठ खोलो।
- सांवत : [थोड़ो निरास होम'र] हो सकै, म्है थारी बात रो समरपन नी कर सहं। वण साच रो जगा भूठ रो मान बघ सकै, या बान म्हारे गळी नी उतरै।
- मागू : [मजाक मे] वण जबा गळी नै बयू खराब करो। सोपो रा तो गळा माफ होय रेया है।
- सायर : [घड़ी कानी देख'र] घरे बाता ई बाना मे दस बजग्या।
- सांवत : [आकतो सो होम'र] बात रो अंत नी हूवे। त्यो घब तो चर्या। आज तो खूब हमाया करो।

[तीगू उठ'र आप-आपरे घरे जावण लागे।]

[घीमे-घीमे घंघकार]

चौथो दरसाव

[मुझे रो बल्लत । बस स्टैण्ड री चैल-मैल । सरूप री दुकान माथे पना जणां री भीड़ । केई आपस में धीमे-धीमे बतलावतां । केई लोगां री चेरे पर रोस पर केई डर्योड़ा सा ।]

भादर आपरा पायचा टांग्या पाटिया माथे बैठ्यो है । उण री सारे बैठ्यो है हणमान अर मदन । वा री मामै-सामी केई जणा खड़्या है । सहप घाय बगारने स्थिति नै की भड़कावण लागे ।]

सरूप : ओ गांव तो डूबग्यो ।

मदन : काळी धार डूबग्यो ।

सरूप : सब काळी घोळी रो तो ठा नी, पण बातावरण साब बिगड़ग्यो ।
(चेरो गंभीर पड़ गया है ।)

[भीड़ री मांय सून मांगू निकल'र दूजे कानी बैठ गया है । सरूप उण नै बैठता देख लेवे । बो उण नै पाटिया माथे बैठण सारू केवे, पण मांगू घे कानी ई ठे गया है, घोड़ो-घोड़ो हुंसे । दो प्यार जणां मांगू री सारे खड़्या हो गयारे ।]

मांगू : (बैठना ई) हा, तो काई कह्यो, बातावरण बिगड़ग्यो काई ?

सरूप : हा, साब ।

मदन : क्यूं सरूप [उण नै हुंकारो भरावतो] ईं गांव नै चुगाव नै डूब्या ।

मांगू : पण चुगाव तो मारे हुंसे, छटे चुगुमी नुकी बाग है ?

सरूप : [हमारे] स्यो नुकी कानी ?

मांगू : क्या ?

सरूप : मई काई जगह—ये भी धाब्या नू देणो घर काना नू गुणो हो घर कान काई हुंसे, ये भी गुणो होनी ?

मांगू : काई होनी ?

सरूप : नून बादरा बगारो, वा नून काई छानी है ।

मांगू : (हमारे) छरे, नू क्या काई होणो ?

सरूप : मूने नून कानो के मूने ।

[भादर धर हनुमान चाय पीवसु लोखे, सरेये धर मांगू री बात नै ध्यान मू गुगुं धर दूजा जबा घे डे-छे डे बनलाय रया ह्यो, उला री बात सारू भी बान लगाय लेवे ।]

मांगू : पछे भी रगडो बाँटि ह्यो ?

मन्नर : धजो बावड़ा नाथू नै पीट नाथ्यो ।

मांगू : कटे ?

सरूप : बान चीणी मून गी ई । बो भी गयो ल्यावण बास्तै । धव ये जाणो हो—चीणी मे तो तोल धर मोम गोभयां मे गांठ काटेई है । नाथू घाट तोलखे रो धैतराज कर्यो, पछे बाँटि हो, गुमान जी रा लावरी कठ पकड़ तिया धर सोम काड़ नाथ्यो ।

मांगू : आ तो गलन है ।

सरूप : गलन बैवगुं मू बाँटि ह्वे ? गरीब रो हिमायती कुण ? ई गाव में धेक भी हरयो भाई रो लाख कोनी जको नाथू री तरफ सूं धोख्यो ह्वे ।

हनुमान : (बीच में ई मजाक करनी) बोले कुण ? सगळा रै घर मे चीणी पूगे ।

सरूप : जहर पूगे । धं ठिकालसिग जी तो पाव-पाव चीणी मे बिकभ्या ।

मांगू : (मजाक में बोलतो) चीणी मे नी, धेक-धेक चाय मे आपरो आपो खो दियो ।

भादर : (पोड़ो ताव में) तूं बोले, जठे जाणू हूँ । धरै लाख तो सगळा रै मूँ डे पड़ै, पण चीणी खाणू दोरो घणू है ।

मांगू : (हुंकारे साथै) जरूर पड़ै । खासी जको पासो भी ।

भादर : पण लुवाणू हरेक रै बस री बात नी । की जोर धावे है ।

मांगू : जोर तो बाई धावे है । सरूप तो आ कैय रैयो है लोग पाव-पाव चीणी में बिक रैया है धर म्हे कंबू पाव चीणी मे छोड़ो, लोग तो धेक चाय मे सांच नै झूठ धर झूठ नै साच कैवण बास्तै तिपार है ।

भादर : म्हे कह्यो नी, कैवणू सोरो ह्वे है ।

हनुमान : पण भाई की भी ह्वे, गांव में जको हो रैयो है, वो माड़ो है ।

सरूप : म्हेनै पूछो तो धं वोट बंद होवणा चाइजे ।

मांगू : वोट धरै धो प्रजातन्त्र है, वोट मूँ तो राज होय रैया है । वोट ल्यो, नेता वणो धर पछे राज करो ।

सरूप : घूल इस्था राज में ।

मांगू : क्यूँ ?

- सरूप : अरै घर-घर में दुपांता, गांव-गांव में दुपांता अर कोम-कोम में दुपांता ।
- मांगू : तू इण नै दुपांता कैवै है । ओ तो हक है—सुतंतर निर्णय लेवण रो । आज घर, गांव अर कोम रो कोई दबाव नी, कोई धूस नी । इण ई तो प्रजातन्त्र कैवै ।
- सरूप : पण काल तो उल्टी बात कैय रैया हा ।
- मांगू : काई ?
- सरूप : ठाड रो नांव सरपंचाई ।
- मांगू : हा, आज भी कैय रैयो हूँ ।
- सरूप : जणा प्रजातन्त्र सुख रो आसरो या गोदम रासो ।
- मांगू : म्है देख, सीपी बात कैय रैयो हूँ—आज राज तो प्रजातन्त्र है पण बो है कठै, आ देखणूँ है ।
- सरूप : थे तो सा पढ़्या-लिख्या हो, इण वास्तै आं बातां नै समझो रो, पण म्है तो अणपड हां ।
- मांगू : म्है खुद आ ई कैय रैयो हूँ के कागजां में प्रजातन्त्र घणूँ चोसो लागी । घोसणावां में प्रजातन्त्र रो की बरोबरी नी, पण अमल में बात बा ई है जकी पैत्यां ही ।
- सरूप : (खुस होय'र) बस तो, म्है खुद भी आय कैय रैयो हूँ ।
- भादर : बीच में बात रो ठेगो लगावतो) बात बा ई रैगी लठ रो जोर सदा रैयो है अर लठ नै ई काको कहाो है ।
- सरूप : म्है जी धारै कर्नै तो लठ रो जोर है ।
- भादर : है, जकी है ।
- मांगू : (ब्यांग में) अब देखले प्रजातन्त्र लठ में है या दूजी ठोड़ है ।
- सरूप : लैर, अतो तो म्है भी समझू हूँ, साथ भोळो नी हूँ अर आ ई दिवाळसिमां में रैयूँ हूँ ।
- भादर : फेंट में आयो बोनी, नी तो ठा पड़ जानो ।
- सरूप : (बाग बाटतो) बं घोर देसो, जका बापड़ा जोगू में मग्गी देव रैया है ।
- भादर : (ताव में आय'र) म्है पना जणा नै बिश्वासो है । या बाप बोई दूजो ई बेचैरो ।
- सरूप : (गुम्मे में) तो या पोन अउं ई मिथी बाई ?
- भादर : म्हानै तो मगई पोन लागी ।
- सरूप : म्हारी मानो तो ई मेष में रोग्यो भी सदा ।

भादर : भैम तो मूँ घणा जणा रा काढ़ दिया, भाजकाय-वाम ई धो
कर हूँ ।

सरप : करो जको भी जानां हां ।

भादर : (पायचा नै थोड़ा ऊँचा कर'र, गुस्से में तण'र घमकी देवती) काई
जाणै है, धरुं सिर पर चढ़ै है काई ? दो मिनट में धी पाटिया माक
कर द्यूंगो ।

[गुस्से में भादर सरप्यो हां ज्वाबें घर हणमान उण नै पकड़ लेवै, बाग
बघनी देव'र घणां जणा सरप री दूसान मामे इकट्ठा होवण लागै । धार माथे
हमलो मान'र सरप भी छानी ठोकर खड्यो हो ज्वाबें । मागू उण नै घाम लेवै ।
थोड़ी ताळ हो-हा हूँ घर गाड़ी काड़यो भादर वठै मु बन्यो जावै ।

सरप गुस्से में लाल होय'र जोर-जोर मू बोलण लागै । मागू मन ई मन
थोड़ी मुठवै । मागू रै बँवणू मू सरप की मान्न हूँ घर पाछो बैठ ज्वाबें ।]

सरप : धी करदया पाटिया माक । देया ना धानै ।

मागू : (सरप नै धीजो बपावतो) धीर, जाण दे, कुण काई रा पाटिया माक
कर सकै है ।

सरप : सगळा मिर धाया फिरै है घर ऊपर मू घूम धावे ई ई म'र
हा । दूसरा तो भेड़-बकरी हूँ ।

मागू : घूम रो अब जमानो बटै ?

सरप : पण धी तो, धा ई समझ राखी है । गाव में ई बग मो हूँ । ई
बावा जिया गाव जानै घर इहारे मामे जको बोने, उण नै ब'र
ई जावा ।

मागू : धा भी बटै हूँ है ।

सरप : घर पे बीरो हां, प्रजानग्न है, मदला मृतर है ।

मागू : भाई प्रजानग्न तो जरूर है पण धी हा सोमा रो भी अलग हो लग्न कर
अलग लग्न है ।

सरप : (थोड़ी होमिपारी दिखावतो) ओ लग्न-लग्न मो ई मरटा जाण है ।
जोर भी बटै मुं अर बटै माई रो है, धा भी जाण है । (घर हट
जावै । मागू दूबी बाबी देखण लागै । बी जणा ई गिदिगि कर
जाणकारी सेवण दूबी टीट बननावण लागै ।)

मागू : (बी सोब'र) अरे जणा ई ई बहना बक, ओ प्रजानग्न की प्रजानग्न
है । उबै बने जोर मदला रा लग्न है बो ई प्रजानग्न ई र
घररा पद जमा सकै है । ई जोर रा बटै कर है—बटै बो बोहर

भमकी है तो कठे घमण्ड रो नसो, कठे जात-बिरादरी रो बूम
तो कठे डोका चरावणू ।

सरूप : खैर, ई' डंग रा जोरावर कई देस्या है । आज कुण है जको एन
नै राम कँवै । पछे ये बताओ, म्हैं अबार कुण सी वेदंगी बात बरी ।
पण भैं तो आ ई कँवै'के म्हाने घड़गी, जकी बाड़ में बड़गी ।

मांगू : (थोड़ी स्थिति नै समझतो हुयो) जोर तो ठाडो ई है—सरपंच भाते,
विधायक आंरो घर अँक-आघ मन्त्री भां रो । अँ तो जती ऊठ-बै
करावै, यती ई थोड़ी ।

सरूप : पण अँ आ नयूँ मूलै'के भागलो तो साब माटी रो बण्योड़ो है । थोड़ा
दिना पैल्यां, बै मानजी जी उछळै हा, बोल्या ई' गांव मे कोई नै
यसण ई कोनी देवां । सदा डेढ़-बोतल रै नसै में बोल्या । एछैं
चढ़्या बां खांग जी आळा गीगलां रै चक्कर में, जको मूँबै सूँ भाग,
बगा दिया ।

मांगू : (बात रो समर्थन करतो हुयो) हां, सेर नै सवा मेर भी नितै ई
कँवत कदै भूठी नी हुवै ।

सरूप : जणा ई तो म्हैं थां नै कैयो हो'क अँ बोट ले डूब्या, ई' गांव नै ।
अब तो तीन-तेरा रो राज है ।

मांगू : राज है कठे ?

सरूप : हां, राज तो बस पायचै अर भूँछ रै बट में आयग्यो । गरीब रो ओ
मौत है ।

मांगू : राज गरीब वास्तै कुण सै दिन हो । हाथी रा दांत दिखावण रा दूग
घर लावण रा दूजा हुवै ।

[सरूप चाम बणावण लागै, लोग धीमे-धीमे खिसकणा मुरु हुवै । भापरी
घड़ी में टेम देख'र मांगू भी स्टैण्ड सूँ घरां कानी रवाना हुवै ।]

(धीमे-धीमे घंघकार)

: अंक—दूजो :

पैलो दरसाव

[दोफारा रो बगन । गाव रे घायगं छंड इन्दरा रो मकान । थोसी घर
सोनरी बेटन । पलंग, सोपा घर कुतर । पोन रो बनेकमन भी । दूजी कानी होय
परा मकान, भेक रे माय भाटो पीमण रो चक्की घर दुर्जे मकान मे नाज रो दोर्या
घरा मू' थोड़ी दूर माथे मराब रो ठेका । इन्दरा रो गीर । धँक बग ई चाले तो
होगमन रो पुरानू पंपो । इन्दरा रो सगळो ध्यान पीगो बटोरण घर आपरे मतलब
मे होमियार रैबण रो नीन आळो ।

बेटन रे गामे छेक जगी नीमा इन्दर भाषा माथे बेटयो आपरी डायरी रे
माथे की लिखे । भादर घर भाबर दोग्गू आवे]

इन्दर : (दूर मू' देख'र) आवो भाई ।

भादर : (हाथ मे डायरी देख'र) क्या रो हिसाब-बिताब होय रैयो है सरपच
सा'ब ।

इन्दर : ई' माथे माथे बेटो (माथे कानी टगारो करे । भादर घर भाबर दोग्गू
जगा, माथे नै थोड़ो सरपच रे माथे कानी खीचकर बेट जयारै । भाब
थोड़ी-थोड़ी मुळक घर भादर कमीज रा बटण सोल लेवे घर आपरी जूती
खोल'र पग जूया माथे घर लेवे ।)

इन्दर : बी गरमी पड़ण लागी ।

भादर : (मन्नाक मे) गरमी तो आपण मे सदा मू' रैयी ।

इन्दर : (हँस'र) सो हो, म्हे थोड़ी सा बीबा । म्हारो मतलब तो भाई मोसम
सू' है ।

भादर : (बात नै साभलो हुयो) बापजी, थारै कन्ने रैवा घर गरमी नी लागे
सा बिदा हुवे ?

इन्दर : (हा भरलो घर मन मे मुळकतो) ठीक है जवान आदम्या मे ई गरमी नी
हुवेनी तो पछे बाई कूडा रे माय हुवेनी ?

भादर : सो रामो गरमी मू' ई जम रैयो है ।

भमकी है तो कठे घमण्ड रो नसो, कठे जात-बिरादरी री धूम है
तो कठे डोका चरावणू ।

सरूप : खैर, ईं ढंग रा जोरावर कैंई देस्या हैं । आज कुण है जको राम
नै राम कैंवै । पछे ये बताओ, म्हें अबार कुण सी बेदंगी बात करो ।
पण अँ तो आ ईं कैंवै के म्हाने घड़गी, जकी बाड़ में बड़गी ।

मांगू : (थोड़ी स्थिति नै समझतो हुयो) जोर तो ठाडो ईं है—सरपंच आरे,
विधायक आंरो अर अँक-आय मन्त्री आं रो । अँ तो जती ऊठ-
करावै, बसो ईं थोड़ी ।

सरूप : पण अँ आ नयूँ भूलै के आगलो तो साव माटी रो बण्योड़ो है । पाँ
दिनां पैल्यां, बै मामजी जी उछळै हा, बोल्या ईं गांव में बोई ।
बसण ईं कोनी देवां । सदा डेढ़-बोतल रै नसै में बोल्या । पछे
चढ़्या बां खांग जी आळा गीगलां रै चक्कर में, जको मूँ ईं मूँ आग
बगा दिया ।

मांगू : (बात रो समर्थन करतो हुयो) हां, सेर नै सवा मेर भी निनै ईं
कैंवत कदै भूठी नी हुवै ।

सरूप : जणां ईं तो म्हें पां नै कैंयो हो'क अँ बोट से डूब्या, ईं गाव नै ।
अब तो तीन-तेरा रो राज है ।

मांगू : राज है कठे ?

सरूप : हां, राज तो बस पायबे अर मूँ छ रै बट में आयग्यो । गरीब री ठो
मोत है ।

मांगू : राज गरीब वास्तै कुण से दिन हो । हाथी रा दांत दिसावन रा दुग
अर रावण रा दुजा हुवै ।

[सरूप चाय बणावन लागै, सोग धीमे-धीमे तिराकणा मुरु हुवै । आरपी
घड़ी में टेम देख'र मांगू भी स्टैंड मूँ परां कानी खाना हुवै ।]

(धीमे-धीमे ध'पकार)

भावर : (हां भरने) हां, मुझी हो ।

इन्दर : मैं ये १ दिन गुजारी मे भाई मित्रो कर ये झां जमीरदारा रा टमका बनाया । म्हांगे भेक ई दरवाग मे मूळजी री पिपी बपयी ।

भादर : अब तो ओ पिपी कन्ने उठ-बैठ करे है घर घारी करे है बुराई । काल परभानी ने भइकायो के रटेण्ड मारे तू भी घारी भडी रखले । जवो आर्थगो, दो ने देव मित्र्या ।

इन्दर : ओ बगन पिरपी भी हो काई ?

भादर : पिरपी तो कौनो हां पण उण ने वही आ ई के पिरपी आपरी कौनी है ।

इन्दर : समझायो ।

भादर : किया ?

इन्दर : घारी सप्या-दुवकी जाणू है । ओ आपड़ा बामण कनो मूं पघारा रिपिया दिया बनावे है । काल मंज जी रें मिदर साथी बीवा-परी दुई बनावे ।

भावर : जणा घारा मूं काई छानी है ।

इन्दर : मैं तो ओ मगळा ने जणू है । ऊपर मूं वावा घर घर में नागा ।

भादर : ई पिरपी ने भी थोडो जचाया जणा पार पड़ । (थोडो गठीने-बडीने देवर) घाने टा है मूळजी आली जमीन सगळी दाबली । भान जी ने मूं टो दिता दियो ।

इन्दर : किया ?

भादर : कुबे मारै बिजली बैटाई जणा बी री तीर करयो हो । भागजी भोलो हो, पीमा भी दिया घर आज बांटा लाई तरमे है ।

इन्दर : भानजी ने कौनो क आपणा मूं मिले । पिरपी ने तो दरयो गगारुंगो के तीन तिचो छी दीवनी । (मरवारी बाग गुनर आदर पण खुस हुई ।)

भादर : तो, अब भी भावर री भी गुणो ।

इन्दर : भोलो । (भादर भादर कौनी देखन लाग जावे)

भादर : अब गुणाय ।

भावर : (भादर मूं) अब ये ई बीवो ।

भादर - बात आ है क अब तो दण ने रटेण्ड मारे दूरो बादरे, दो भी आपरी बाय-बाणी री दुबान करण जावे । दूरो दण दांज ई रे

इन्दर : गरमी चाये भाई ।

भादर : पण गरमी मूँ के धानना भी हो रेंया है ।

इन्दर : होणदे, दया ई राख रोखमी घर ईयां ई पावणा जीमैयां ।

भादर : खैर, धापा तो कोई माझा री परवा करां कोनी ।

इन्दर : परवा घर आपा । आज नो काचो स्यायो नी ।

भादर : (नटगो मो) भई तो बँकू हूँ । बाकी ये भी जानो हो ।

इन्दर : धाज तो तू बँकू जवा नै उजाडदयां घर तू बँकू जवा नै बताइयां ।
धापरणू राज है ।

भादर : (हामळ भरतो) धा तो टीक है मरपंच साब ।

भादर : भाई सरपंच है मरपंच । मैंने घर एम. पी भी आपरें इसां नै धूछरें काम करे । राज री जड़ तो मरपंच है ।

भादर : जरूर है भा । मानबाळा री बात तो मानणी पड़मी ।

इन्दर : (प्रसंग नै बदळतो) पछे मास्टर जी री की सुणी काई ?

भादर : अब काई सुणनी है । गया धारें कं भाव में ।

भादर : (अचरज मूँ) मास्टर जी कुण ?

भादर : स्योरास जी ।

भादर : काई हुयो ?

भादर : तन्ने ठा नी । चुणाव री बरात पसबाड़ा फेरें चाल, रेंया हा । बोट बोट जवंगी जकें नै देस्यां ।

भादर : बोझा अकड़्या ना ।

भादर : काडदी ना अकड़ । सरपंच साब डाळ हिंदा टमकोर मांकड़ । (इत हसण लागे) घर अब तू देखजे अकड़ धणां जरां री निबळ ज्यानी ।

इन्दर : (घोड़ घीमें मुर मे) अकड़ की री ई नी छोड़ा, सरपंच बगल बास्तं हां ?

भादर : अके तो ईं मूळजी री भी चांचरो मूज रेंयो हैं ।

इन्दर : मूळजी ?

भादर : पैलाद जी आओ ।

इन्दर : अरें छोड़ ईं मूळजी नै चटको दिसा दूँ ।

भादर : म्हारी माने - ऐ इण ई

इन्दर : त

। आओ जमीन नै अकड़
पंच करे उपनै दुआरा

भादर : (हां भरती) हां, गुणी ही ।

इन्दर : म्हनं अेक दिन मुतागी रो भाई मिल्यो अर वो आं जागीरदारा रा टमका बनाया । म्हारी अेक ईं दरकाम मे मूळजी री घिधी बघयी ।

भादर : अब तो ओ पिरधी कन्ने ऊठ-वैठ करे हे अर धारी करे हे बुराई । काल परभानी नं भडकायो के स्टेंड भाई तू भी धारी धडी रखले । जको आंगो, दो नं देख लेस्या ।

इन्दर : वो बगन पिरधी भी हो काई ?

भादर : पिरधी तो कोनी हो पण उण नं कहो आ ई के पिरधी आपणी कानी है ।

इन्दर : समझयो ।

भादर : किया ?

इन्दर : धारी लप्पा-दुबकी जाणूँ हूँ । वो बापडा वामण कनां सूँ पचास रिपिया लिया बतावै हूँ । काल भैरु जी रं मिंदर सामे पीवा-धरी हुई बगावै ।

भादर : जणां धारा सूँ काई छानी है ।

इन्दर : भै तो आं सगळी नं जणूँ हूँ । ऊपर सूँ बागा अर धर में नागा ।

भादर : ईं पिरधी नं भी थोडो जघायां जणा पार पड़ै । (थोडो अठीन-अठीन देखे) धाने ठा हूँ मूळजी आळी जमीन सगळी दावली । भान जी नं नूँ ठो दिखा दियो ।

इन्दर : किया ?

भादर : भुवै भावै बिजली वैठाई जणा धी री सीर कर्यो हो । भानजी भोलो हो, पीसा भी दिया अर आज बांटा ताईं तरवै है ।

इन्दर : भानजी नं कैवो'क आपणां सूँ मिलै । पिरधी नं तो इत्थो फसावुं'गी के तीन तिनी ही दीवती । (सरपंच री बात सुन'र आवर पल सम हवे ।

भादर : तो, अब की भादर री भी मुणो ।

इन्दर : बोलो । (भादर भादर कानी देखण लाग जावै)

भादर : अब मुणाय ।

(भादर सूँ) अब ये ईं कैवो ।

तात आ है'क अेक तो इण नं स्टेंड भावै पट्टो चादये, दो भी . . . पाय-पाणी री दूकान करणूँ चावै । दूजी बात भा'क ईं रं

इन्दर : गरमी चाये भाई ।

भादर : पण गरमी मूँ के घागता भी हो रैया है ।

इन्दर : होणई, इयां ई रांठ रोखंगी भर ईयां ई पावणां जीमैगां ।

भादर : मँर, घापां तो कोई माळा री परवा करां कोनी ।

इन्दर : परवा भर आपां । आज तो कांची स्यायो नी ।

भादर : (नटरतो सो) भै तो कँवू हँ । बाकी बे भी जानो हो ।

इन्दर : आज तो तू कँवै जका नै उजाड़दयां भर तू कँवै जका नै बसाद्यां ।
घापरूँ राज है ।

भादर : (हामळ भरतो) आ तो टीक है सरपंच साय ।

भादर : भाई सरपंच हँ सरपंच । भँमेले भर एम. पी भी घापरै इलाके नै
पूछ'र काम करै । राज री जड़ तो सरपंच है ।

भादर : जरूर है सा । मानवाळा री बात तो मानणी पड़सी ।

इन्दर : (प्रसंग नै बदळतो) पछै मास्टर जी री की सुणी काई ?

भादर : अब काई सुणनी है । गया बारै कँ भाव में ।

भादर : (अचरज मूँ) मास्टर जी कुण ?

भादर : स्योसल जी ।

भादर : काई हुयो ?

भादर : तन्नै ठा नी । चुणाव री बखत पसवाड़ा फँर'र चाल, रैया हा । बो
बोट जबंगी जकै नै देस्यां ।

भादर : बोळा अकड़्या ना ।

भादर : काडदी ना अकड़ । सरपंच साव ढाळ दिया टमकोर सांकड़ । (इत
हंसण लागै) भर अब तू देखजे अकड़ घणां जणां री निकळ ज्यासी ।

इन्दर : (घोड़ घीमें मुर में) अकड़ की री ई नी छोड़ा, सरपंच बण्या क
वास्तै हां ?

भादर : अक तो ई मूळजी री भी चांचरो मूज रियो हँ ।

इन्दर : मूळजी ?

भादर : पैलाद जी आळो ।

इन्दर : भर छोड़ ई मूळजी नै तू कँवै जणा चटको दिख्वा द्यु ।

भादर : म्हारी मानो तो इण नै चटको दिख्वावो ।

इन्दर : तू कँवै जद ई । मँन नै तन्नै ठा हो, मुनारां धाळी जमीन नै आप बाई
ही । मुनारी बापड़ी घापरै पीर में रैती । मूळ-गांव कर'र जणा
दियायो । अठै मँर बम जागीरदार बण्यो ।

भादर : (हां भरतो) हां, सुणी ही ।

इन्दर : म्हनं ये ऋ दिन गुनारी रो भाई मित्यो अर वो भां जागीरदार रा रा टसका बताया । म्हारी अंक ई दरनाम मे मूळजी रो पिथी बंधगी ।

भादर : अब तो वो पिरधी वन्ने ऊठ-बैठ करै है अर पागे करै है घुराई । काल परभानी न भडकायो के रटण्ड माई नू भी पारी धडा रखति । जको आवैंगो, वो न देखे लेम्या ।

इन्दर : वो बगन पिरधी भी हो काई ?

भादर : पिरधी तो कोनी हो पण उण न वही भा ई के पिरधी बागन कानी है ।

इन्दर : समझायो ।

भादर : किया ?

इन्दर : आरो लप्पा-टुककी जाणू हूँ । वो बापरा बागन बगीचू वषाग रिपिया निवा धताई है । काल भैरु जो के मिदर माई पोवा-परी हूँ ।

परों सारें प्रेक बाड़ों है जका रो गंतो सदा सूनं समरथ जी प्राळी कोटही रै सामं सूनं गयो है पण अब काल सूनं वो गंतो बन्द कर दियो ।

इन्दर : कुण ?

भावर : वो समरथ जी घाळो भोपाळ ।

इन्दर : पण क्यूं ?

भावर : ठांडमदाई ।

भादर : वो कह्यो बतावै है अठं घणां सरपंच हैं, तू सोच'रचालजे ।

[भादर अर भावर री बात सूनं इन्दर सावचेत हुयो । उणनै ललायो'क कोई उण रै माथें सीधो हमलो कर्यो है । ईं बीच जसजी चाय लेय'र आज्यावै । तीनू जणां आप-आपरा कप उठाय'र चाय-पीवै । थोड़ी ताळ साव चुप्पी । भादर अर भावर सीचें स्यात सरपंच साव ईं समस्या रो उपाय सोचता होसी ।]

इन्दर : (धीरज बघावतो) डरलैं री तो कोई बात नी है । भोपाळ नै स्योपाल रो ठां नी । सरपंच रा पावर म्है जाणां हा । इंधा तो म्हानै कोई भी डरा सकै है भाज राज ठांडमदाई रो नी, कानून रो है अर कानून कोई है, म्है जाणां हा । सारली साल गांव में डाय बाजी ही, वें सगळा अब पेसी मुगता रिया है तो भाई आ रो उपाय म्हारै कर्नै है ।

भादर : अर जे ठांडमदाई सूनं ईं गंतो बन्द करै तो आपां भी भोपाळ सूनं सवाया हां । अठं तो जको रैसी, वो नै सरपंच सूनं रामा-स्यामा करणी पड़सी । म्है तो सीधी प्रेक बात जानूं हूँ ।

इन्दर : (भावर कानी देखतो) बस, बात तो अती ई है, करमी जको ई रैसी वें पटवारी जी तण्या, जको बड़बड़ मुवाणै जाता ठेस्या, वो वाटर-बक्स घाळो होलदार लाडसाब बण्यो तो रातू'रात गयो, सामान भी दूजा ईं पुगयो अर जद चन्दरो लाइनमेन मिनिस्टर जी री घूस दिसाई तो म्है बी रो फटाफट कनेक्शन कटा दियो । ईं वास्तं प्रे गांव रा डिपार्टिसन जी तो म्हारा देख्योड़ा है ।

भावर : (मन में खुम हो तो) अजो ये चाया, काई नी हूवें ।

इन्दर : तो भाई, बस-स्टैंड तो लठ घाळो रो है । तू भी यही जकाने प्रावेणो जका नै देखांगां ।

भादर : मतलब वो नै म्है जचांवांगां । ऊन रो गुरू जुन । ईं गांव -

घोक ईं बेन रा तूमड़ा हैं ।

इन्दर : भोपाळ नें ग्हे दही रें माय चूर'र देरयां । (सुद हरण लागे ।

भावर : अत्तो मेहरबानी हुय ज्यावै तो बस चावै ईं काई ? भावर भी चागे ईं समझो । घाघीरान नें भी हेलो देरयो, तो डाग लिया तयार हूँ ।

भादर : पछे म्हाने चावै ईं काई ?

भावर : न ईं, घोर भी की घाप चावो तो म्है.....(जिब में हाथ देवें)

भादर : हां हा, ठीक है । मौको जाणजै, कर लेरयां ।

[इन्दरो मावै मूँ उठे घर भादर नें थोडो घलन से जावण रो इमारो कर्ने । भादर भावर नें 'थोडो ठेर' कर्'र इन्दरा रें सारें-सारें चालें । दोग्गू पड़ीक बत-झावें । बान कर'र दोग्गू भावर कानी घाग्याबैं]

इन्दर : तो ठीक जणां ।

भादर : ठीक । बी नें ग्हे (इमारो कर'र) देन लेख्युं । मानें जणां तो ठीक है भीतर घापणो कर्ने पणा ईं उपाय है ।

इन्दर : (थोडो हसन लागे) हां, माण्यो भी की तान-मबर पनी करे है ।

भादर : (रंग दिलावतो) बी री सोई भी उतार देग्यु ।

इन्दर : (ध्याय मे) घा सोई पणा रें आबण लागी, चबकर काई ?

भादर : ये तो आं डोफां री परवा ईं मन करो । सोई घण्टा नें मो घण्ट के मुखा देग्यु ।

[इन्दर घर भादर दोग्गू हसन लागे लागे भादर भी ।]

(धीमे-धीमे ॥ चकार)

दूजो दरसाव

[सिद्ध्यां रो वगन । कोटड़ी रो गट्टो । दो च्यार जणां बैठ्या बठळार । बिजळी नी होयण रे कारण गट्टे माथे घणू अंधारो । रंगू रावळा सून तुळळां रा पना लेय'र वेगो सो भिदर कानी जावना । मांय'र 'अरे मोड' कैय'र रंगू सून बननाई, पण रंगू 'अवार नी' कैय'र वेगो चलयो जाव । थानयोडो अर माथे लकड़ी रो भरोटी साम्या पनजी गाया नै टिचकारतो गट्टे र सारें सून निकळें । रावळें में विरगू आपरे वेटे अमोक नै जोर-जोर सून हेला मारें ।

सायर, हणमान अर मदन भी उठ'र घाय-आप रे घरें चल्या जाव । गट्टे र अंई-छेई फेरूं सून्याड । भिरभिर भरतो अंधारो ।

घाठ वजलै में पाच मिनट री देरी । मांगू आप आळो ट्रांजिस्टर लेय'र गट्टे माथे बैठ ज्याव । गयोडो बिजळी रे आवण सून गांव में हाको हुव । गट्टे र माथे मदरी रोसनी रो उजास फैल ज्याव । मांगू घडी माथे निजर टेक'र बी. बी. सी. लंदन सून खबर सुणनै वास्तै ट्रांजिस्टर री गुई नै धुमाव । अर्त में खबर आवणी सुरू हुव । मांगू ध्यान सून खबर सुण । ठंडी रात अर खबरां री गूजती आवाज । खबरी रो सोफीन सावत खाताई सून गट्टे कानी आव ।]

सांवत : काई खबर घाय रंथी है भाया ?

मांगू : खबर सुणो ।

[दोन्यू ध्यान सून खबर सुण लागै । डकार लेवतो सायर आव । चुपचाप बैठ'र खबर सुणावा लागै । अर्त में बीड़ी पीवतो अर नसैं में गैलीज्योडो सो पिरथी आवै अर 'ज गोपीनाथ जी' री कर'र बैठ ज्याव ।]

पिरथी : मटी बी. बी. सी. बोल रंथी है ।

सांवत : हूँ ।

मांगू : (मन में मुळकें अर पिरथी री नसैं में तिरती आंरयां नै व्यंग्य में देखतो हुयो) आ बी. बी. सी. है ।

पिरथी : जा लफोड़, म्हनै काई ठा नी । कयूं तूं ई घणू पढग्यो काई ?

मांगू : ओ हो, म्हैं कद पढ़ाई रो गुमान दिखायो । म्हैं तो कैय रंथो हूँ क आ बी. बी. सी. है ।

यो : कयूं, म्हैं काई नसैं में हूँ ।

सावत : (घोड़ो हँस'र) जद ई तो नैयो ।

पिरथी : म्है भाई, म्है तो नगै मे घर चे स्याणां । पण कद रा स्याणां ।

मांगू : देग्या जद मूँ ।

पिरथी : घरै बाह ! लाग्या जोना । आं पडेगस्यां मूँ तो लाई पनजी ई
चोन्नो जको गाय चरावै घर नेजो गावै ।

सायर : घरै भाइड़ा चोगी रोळी करी खबरां री । बंद कर ईं रेडियो नै ।
[मांगू ट्रांजिस्टर नै बंद कर देवै घर पिरथी कानी देस'र हसन
लागै]

पिरथी : (मजो लेवतो) घरै बयूँ दात काई रांडघट्टा । (मांगू फेरु भी
हसन लागै)

सावत : भाया मुणली खबर । अब भागै री खबर आ मूँ सुणो ।

पिरथी : म्हारै मूँ ?

सांवत : हा धारै मूँ । की अब चे गुणावो । बी. बी. सी. तो पूरी हुई ।

मांगू : ना, घै भी बी. बी. सी. मूँ कम भी पड़ै ।

सायर : आ तो ठीक कही भाइड़ा ।

पिरथी : घरै बयूँ मूरख बणावै पूंगानाथ । म्है काई बावळो हूँ, सेर घान
सावूँ हूँ ।

मांगू : बणावै बृण, आज तो लोग खुद पूंगानाथ बणै है ।

सांवत : ना भाया, आ बात गळै कीनी उतरै । टेम माथे हरेक पंगानाथ
बणै ।

सायर : गरज चीज यही है ।

सांवत : ठीक कही भाया । आज गरज री बीमन है ।

मांगू : (हा भरती) हा, गरज मूँ ठा पडै'के आ की है ।

सायर : पण गरज रा भी तरीका बदळ्या । गरज माफ घेड़ा-घेड़ा काम
करणा पडै'के भले मिनत नै संवना ई मरम घावै ।

मांगू : गरज घर सरम दोन्यु ओके ताथे निजे बोनी ।

सावत : हा, गरम रा तो घर जमाना रिया बडे ।

सायर : सरम कदया लाय बाई ?

सांवत : ई वालन ई, नी तो मरम रियो घर नी रह्यो घरम ।

मांगू : घरम तो घंघो है घर पया मे गरम दोगावै नी ।

सांवत : धरम काई, आज तो आदमी हरेक चीज नें घंघो माने । उण रै मांव धर चिनन में अतो बढलाव आयग्यो'क वो हर चीज नें नरु-नुवमान री तालड़ी मायें तोले । उण रा भाव अर बिचार समूदा पेट धर पेट री पूरती मूं जुह्योड़ा है । धरम-ध्यान अर दान-गुण्य तो लोक प्राइ है, भोळें मिनस नें मुळावणी देवण मारु ।

मांगू : हो, आज तो ओ ई होय रैयो है ।

सांवत : दिवायो पैला मूं पणूं बढ्यो है बयूं'क दिपावें रा साधन बढ्या है—जमानें मुजब । ओ ई कारण है'क धरम अब आस्था नी मनोरंजन है, अजीब सोक है ।

मांगू : आज री आदमी मनोरंजन चावें । वो धरम नें भी मनोरंजन री सीधा माय ई अ'भेज ।

सांवत : धर धरम रा ठेकेदार इस्या'क कैंवें कीं धर करे कीं ।

सायर : भाइड़ा, ठेकादारी है ई झंड़ी । लोग टावरी पाळें अर धरम रुलाळें ।

मांगू : रुग्याळें जकां नें दुनिया जाणें है ।

सांवत : दुनियां तो भाई कीं ई नी जाणें । वा तो बापड़ी पलदारी करे । जठे जिस्यो बोझ उठाणूं पड़ें, उठावें ।

मांगू : पण दुनियां नें पलदार मान लिया, आ बात भी ठीक नी ।

सायर : पलदार कतो'के बोझ भरसी ।

मांगू : जठे ताई'पेट है ।

सायर : पेट तो कुबो है ।

सांवत : पैलां पेट कुबो नी, अँक रोटी री जगां ही पण अब तो ओ भरें नी ।

मांगू : कुबो रीतो है या पाणी मूं भरयोड़ा ।

सांवत : पाणी कठे ?

सायर : जणा इण नें कुबो भी किंया कैवां ?

मांगू : भग ई'चक्कर में जावो ई मतां ।

सायर : पण जीवत जी नें मंडको तो देणू ई पड़ें ।

सांवत : (थोड़ा पिरथी कानी देख'र) अर छोड़ो ई चरचां नै, अगां ठो पिरथी मूं बतलास्यां । ओ जद को मोचें है 'क आं फालतू बार्ता में पड़्यो काई है ?

पिरथी : (हंस'र) म्हने तो अँ बातां साव फालतू माने ।

- सायर - नो भाइहा तू नो गाव री बान कर ।
- पिरथी : गाव नी चारै मूँ बाई छानी है ।
- सायर : झै नो बम गुणा-गुणा हा ।
- पिरथी : मे गुणो बूँ नी । चारै भी की हाथ भावै है ।
- मांगू : घा रै बाई भावै ?
- पिरथी : झै, छोड़ो गेव । झै तो ज्वाणूँ ई गांव रैवूँ है नी ।
- सावन : (घोड़ा धोत्रा मूँ) इया है रै'क ओ ममझयो नी'क चारो मतलब बाई है ?
- पिरथी : ओ नो नी ममझै पण, झै ममझूँ हूँ ।
- सायर : फेरूँ भी बनावणूँ चाये ।
- पिरथी : या रो बेटो बुबद कमावै अर या नै ठा नी हुबै, या जचै कोनी ।
- मांगू : बुबद तो झनै ये भी कम नी कमावो ।
- पिरथी : (गुस्से मे) झूँ की रा टापरा फूँक दिया ?
- सावन : टापरा मे तो सोम रैवै है, फूँकण कुण दे ?
- मांगू : पण घा है कठै ?
- सायर : देख भाइहा, जे तू म्हारा भादर री कँवै तो ओक बार नी पाच बार कँव । झूँ तो बी रो नी धात्र सगी तो नी काल सगी : बिया तू कँवै'क झै गाव मे रैवूँ हूँ सो झै भी परै नी रैवूँ । छानी म्हारै मूँ भी की ई नी । तूँ भी खुद नै काई ममझै है, आ झै भी ओली तरिया जाणूँ हूँ अर तेरा कारनामा भी गाव मूँ छाना नी ।
- पिरथी : (हथेली री पापी मार'र) याने दुहाई मोरीनाथ जी री, जे सांची-साची नी कैवोगा तो ।
- सावन : अरै छोड़ भाई ।
- सायर : झै तो गुणी जकी कैवसूँ । झनै काई डर लागै है । झै भाइहा, म्हारा बेटा रा ई सीरी नी । घापा तो साफ जाणा—करोगो सो भरैगो । पण तूँ घूस मूँ जका री जमीन दावै घर जका नै गैल कर'र घाणा—तमील ताई मे ज्यादा, या कोई चोली बान है ।
- पिरथी : की नै लेग्यो ?
- सायर : बी रामलाल जी घालै टावर नै ।
- पिरथी : रामलाल जी ?
- सायर : जुंवार जी धाळो ।

पिरथी : पण बै घर थे स्याणा घणां ना ।

सायर : स्याणू तो भाइड़ा म्हनै ई गांव में दोरो ई मिलै ।

सांवत : बस काळ पडग्यो काई ?

मांगू : काळ भी पडग्यो घर की स्याणां री आज जहरत भी लोग कम समझै । म्हारे दयाल सून आज भी अठै स्याणां है पण पूछै कुण ?

सांवत : अब तो धीगामस्ती रो राज है ।

मांगू : स्याणा माळा फेरो या भैंस चरावो । अब तो लठ री पूजा है ।

सांवत : लठ री पूजा तो सदा सून रैंयो । पण आज लठ गरीब रो सारो नी ।

मांगू : बस लठ तो लठ है ।

सांवत : पण लठ भी लठ कद ताई रैंसी ? आज तो हाथ नै हाथ लावै है ।

पिरथी : सांची आ है, ये कताई सोचो घर फालतू री बहस करो । म्हाण तो इयां ही पाण चालसी । लुक-लुक'र तो आज घणां जणां बात करै है पण बै चौड़ा में कयू आवै नी ।

सांवत : गरीब कद चौड़ में आयो ?

पिरथी : कयू ?

सांवत : डर लागै ज्यूं ।

सायर : पण भाइड़ा नागाई कोई री ई हुबै, साम्बी नीं चालै । रावण प्रात नै काई भानतो ?

पिरथी : जणां थारै कैवण रो मतलब म्है रावण हां ।

मांगू : आ तो कैवण री नी समझण री बात है ।

पिरथी : (हंस'र) जणां गई भैंस पाणी में ।

सांवत : घणी रोसी, आपणू काई बिगड़ै है ।

सायर : अरे, घणी ई तो मरग्यां भाइड़ा ।

सांवत : (उठो हयो) ल्यो सुण लियो बी. बी. सी. । अब चालां ।

[सगळा उठ'र आपरै घरां कानी चालै]

[धीमे-धीमे अंधकार]

तीजो दरसाव

[मूबे रो बगन । ग्रामली रे मट्टे माथे मांगू बैठयो-बैठयो दावण करे । हवा रो ठंडो भवको घर ग्रामली रो मीठी छोया । रंगू रो टोबणी सेध'र कोटड़ी बानी भावणू । मांगू उठ नै टोक लेबे]

मांगू : ओ रंगू घाब-घाब ।

रंगू : (पण थोडा थाम'र) काई सेर्या तेरे बने ?

मांगू : बयू ?

रंगू : (थोडो मांगू बानी जालतो) थोड़ी तो तू पोबे नी घर इ या श्हारो टेम कटे नी ।

मांगू : आ तो जाणू हूँ पण थोड़ी ह्पाई करी ।

रंगू : भाया इहने ह्पाई कर्या किर्या सरें ? चरा टाबरी बाई नागी ?

मांगू : टाबरी तो सगळा रे है ।

रंगू : सगळा रे तो है, पण इहे तो श्हारी बँबू'क भायतां भायना ई पेट भरें कोनी । रंगू मांगू रे मारे घाय'र बैठ ज्यावे घर घायरी जेब मू' बीरी काड'र मिळगाणी रो श्हारी करे) दुनिया बिना काम बनारै, इहने तो टा नी ।

मांगू : दुनिया तो भाई, नी तो भाय घर नी जायै, बन मोबे घर लोबे ।

रंगू : तू भी मजाक तो पूरी करे है ।

मांगू : देखते दूँ गाब में ई ।

रंगू : दूँ गाब रो खातो तो सगळा मू' श्हारी है । इहे मो इहरो काब देखो नी ।

मांगू : खैर, गाब तो से बरोबर है । आ हवा लट्ठे जावे है ।

रंगू : दूँ गाब में तो हवा बडे ज'बी जावे है जनी कोइ नै दिख ई नी है ।

मांगू : एते मो घायी'र एउरो घर मू'टो कोबू'क जावे ।

रंगू : हा, ओ रूपब साबो है ।

मांगू : पण रंगू इहने मारे के च'होई दब नै ज'लेई दिख'ले, ओ रे काब को बडे मू' निबळै ?

- रंगू : घरे घर तो दूध भी कटे घर तो पाणी भाँव मूँ भी काट रँगा है ।
- मांगू : घरेलु है ।
- रंगू : घो भी गगळा में नी ।
- मांगू : गगळा में हुआ तो घरेलु चाले कटे ।
- रंगू : (बात में बदलतो) पछे वा मस्ती ऊँटा रो काई हुयो ?
- मांगू : (हम'र) घरिया, बाँ ऊँटा रो !
- रंगू : हाँ ।
- मांगू : ईं गाव में तो मस्ती, ऊँट, सांड मैसां घर घरकर बकरां चादी है ।
- रंगू : काई कर्यो जाय ? लोग सरम गरम में दिन गुजार रँगा है, फेरुं भी नागाई कोई चोली चीज नी ।
- मांगू : काई बताऊँ रंगू ? पारी दया सूनं म्हे दो घाँक सीख'र दुनियां थोड़ी समझी, की कितावा म्हे पढ़ी घर की सोचां रँ सम्मरक घायो तो ठा पड़्यो कँ राजनीति रो नसो खोटो घणूँ है ।
- रंगू : हाँ, नमा तो, सँ खोटा हुबं, पण घो कलजुगी नसो है । ईं रो प्रभा गगळा सूनं मनोखो है ।
- मांगू : जका रँ, ईं रो चसको लाग्यो, वो घर सूनं तो गयो ।
- रंगू : घर सूनं तो कोनी गयो पण घर रो खाको बदल दियो । राजनीती : पाणी सूनं तो केई जणा हिङ्कया ।
- मांगू : हाँ, ठीक है म्हेन तो लागै'क हिङ्कणूँ घर भिङ्कणूँ घँ दोनू गत राजनीती में है । धूळ खावो, भाटा फीको घर भोभर उछाळो--घो राजनीती रो खास काम है, पछे नेता भी चिलम पिपौड़ा नसाबाज री तरिया, सु'वारँ साल रंग, दोफारा किरकाट री नाई घर सिध्या भूत री नाई रंग बदलै ।
- रंगू : बिया तो काई नेता घर काई नांगळा ?
- मांगू : वैं तो खैर ओक ई है ।
- रंगू : ईं गाव में देख । नी तो कोई नेता घर नी कोई नांगळो पण आंवस्थोडा इत्या'क मार ई नाखा ।
- मांगू : आ ई तो समझणूँ री बात है । आं में फूँक भरीज री है छेट दिल्ली

रंगू : देख मांगू, म्हेन ई गाव में टोकणी फेरना पैनीम बरग होगया । म्हे
घटें चोम्मा-चोम्मा घर भला आदम्यां नै देख्या है (भागली पर
गिणावनी) मादूळ जी ठाकर, पेमो बाण्यो, भानीबक्कजी जोसी घर
म्योचंदो बळारें ... (थोडो ठहर) ई गाव रा लोग दूजे गाव में
पंचायत करण जावना, पण आज...

मांगू : आज तो भै बान मुणां तो बिस्वाम नी हूँ ।

रंगू : आज तो हाथ में तलवार भूंत राखी है, अब बाप जी इस्या भूँ कुण
तो भिहँ घर कुण दुममणी मोल लेवँ । बाकी बापडा दूजा तो बिना
हळदी रो माग खावणियां है । यानै ठा है—गोदू नै मुकदमा में
पमायो हो जको नाज रो तो काई पाणी रो मुवाद भूलगयो ।

मांगू : हाँ, मुकदमो तो आदमी जद सई जद बी रा दिन माडा आवै ।
बुद्धमिह जी रै तान रो मुकदमो लारला तीम बरस भूँ चाल रियो
है । बुद्धमिह जी तो भागल घरा गया पण अमल री डळी बेटा-भोता
नै सुवाग्या । अब गँटीओ घर मुकदमा लटो । मुकदमा रै चक्कर में
बनवारी रा टावर रुळग्या । वो आज बावळो बण्यो गाव में फिरै है ।

रंगू : मांगू, मुकदमा खोटा ।

मांगू : पण भाई मुकदमा भूँ दूजा भी पळें । धाणादार, वकील, घर जज भी
तो बाट उडीकै । अँक रो दरद, दूजे रै दरद रो इजाज करै ।

रंगू : (हंमण लागै) आ तो टीक है ।

मांगू : चौमामो मुरु हूँ जणा किसान राजी हूँ बयूँक नेव में धान निपत्रणै
री प्राप्त बंधै । दूजे कानी वकील भी चौमासा रो हुरल मनावै बयूँक
मीव-डोली नै नेयँर केई लोगा रा बाबरा फूटै । ईं वास्तु बोई राड
भूँ डरै तो कोई राड री उडीक करै ।

रंगू : दुनिया है—अजब रंग घर अजब डग ।

मांगू : म्हे तो सोचूँ, ओ एक तमामो होय रियो है ।

रंगू : तमामा भूँ लोग पेट भर रिया है ।

मांगू : (बान बदळतो) खैर और मुणाय गाव री ताजा खबरां ।
(हंमण लागै)

रंगू : खबर तो तेरे भूँ काई छानी है । हाँ, म्हेन बना देम काई होगी
(घरी कानी देखण लागै) हान टोकणी में पाव घाटो आवो बोनी ।
काम किया चालसी ?

मांगू : बयूँ मरपचाई रा छोट देख्या काई ?

रंगू : देग भाई टाट तो हैं जागू नी, पण मगळा भादर पेट न दोन री तरिया पीटै है। कोई चोड़े पीटे तो कोई घोलो लेय'र। म' पट्टा बाई है ?

मांगू : हा, पट्टा रो मतलब पट्टे पर पट्टो, फेरू पट्टा न जेव रें मांघ घाल'र कचेड़ी ताई धूमता रेंयो। जद ताई फंगलो होसी, सरपंच भादर धरं सागसी।

रंगू : (थोडो धीमो मुर लेवतो) लोग भादर री सिकायत भी भागै ताई करणू चाबै।

मांगू : सिकायत कुण करै है ? किण रें दोय सिर है—नागा—बूचा—नै मू ऊँचा। पूरा गाव नै मद कर राख्यो है। गरीब री तो रेंवणू मुस्तक है। कानजी री बीस बीपा जमीन झाड़ा—तंडा कर'र भादर खुद दवाली। मुकदमो भी चाल रेंयो है पण नागा नै जीतै कुण ? कानून री स्थिति विचित्र है।

रंगू : भरै भाई कानून भर न्याय है कठै ?

मांगू : कानून भी हमेशा अपराधी री साथ देवै।

रंगू : हां, तो सगळी जगं तळवा साग लाबाळा बँठया है।

मांगू : पण अपराधी अठै तो मूँछ री राज है। मूँछ मायें बट रेंवणू चाइजै।

रंगू : पण भां री मूँछ कटवा भी कुण सकै ?

[रंगू टोकणी हाथ में लेय'र खड्ड्यो होय ज्यावै भर चालण री तयार करै। सार्म मूँ सांवत आवै भर रंगू सावत री झाड़ लेय'र चालण वास्तै कँवे। सांवत ओकर हाथ पकड़'र रंगू नै बँठावण री कोसित करै। पण रंगू बँठै नी]

रंगू : ई गट्टै मायें तो अँक आसी भर एक जासी। म्हनै घणी उँवार होगी। (हँस'र) पछै स्यामण रोळा करै ? (सांवत कांदी देख'र) ये तो बापजी परायें चौके जीमो हो।

सांवत : म्हानै कुण पोय'र घालै है।

रंगू : (मजाक करतो) भा तो हिम्मत होवणी चाइजे।

सांवत : हां, हिम्मत आळा ई गांव में राज करै।

(बीच में ई) देखो भादर पिरधी नै।

: या हिम्मत है या नागाई ?

: नागाई नै ई तो हिम्मत कँवे है।

गावन : हा धर्म बंद क्यों है । इसकी निजत के जो दुःख में हमारे ही समीचीन
साधकों, जिन के निमित्त हमने इस मुलाकाफात्ता कुवा मू बीम पडा
पानी साधकन हिमन म काम है ।

रगू : (हल'र) हां हा— ये धर्म हिमन मानो हो—अं तो मजूर घादमी
म काम है ।

गावन : हा बाई मजूर हिमनमानो जो हूँ ?

रगू : धातु जो जको कोनों काम करें उस में हिमन बी बीम, वन जको
पान में मू गजल काम करें घर के रोज मू काम करें, जो हिमनमानो
मानो है । घर देगानों धर्म गाव में धर्म हिमनमानो कोनी बाई ?

मागू : हा, धर्म को हग की बात बनी ।

[रगू उठ'र भागल मार्ग । मागू उनमें रोचन बाधने बंद वन रगू
हल'र कोटरी बानी धादो भागल बध्या जाय]

गावन : बग देगी मा हिमन ।

मागू : हिमन जो बडे वन हिमन की बात जरूर गुणी !

गावन : तो दातन हाम हूयो कोनी ?

मागू : (मजूर में) दातन बाई घर तो कलेवो भी हूययो ।

गावन : वन भा बाता रा कलेवा मू पेट भर कोनी ।

मागू : धातनो तो म ई पानी घामी ।

गावन : पनी मैं तो धातन कुण सा डाका मारा हा ।

मागू : डाका तो ई गाव में रोज पई है । जकी रो दिन सावळ हूव को मुख
मू दिन बाटे, नीतर घटे कुण पर बिस्वास ? कठ भी बल्पो जायो,
हाथ माह्या घर जब सामी करया सोम बंध्या है ।

गावन : म्हेन तो धर्म बाता मुण'र ताजुव हूव'क धर्मो धाजादी किण काम री ।
देम न देम अर आपसाळी न आपसाळो नी माने तो खाली पेट भरणू
मिनसपणू नी कह्यो जाय ।

मागू : ये मिनसपणी री मोचो हो घर धातन सगळा कयन धापरें सुवारय री
गावें । देम है कठे ? सोम मूंडो फाड्या उभा है ।

गावन : लंद धा है तो माची वन म्हेन मोच नै दिन देख्या है, जट धंधेजां री

आजादी न लेय'र भीठी कल्पनावी जागती । सोचता कई आपणू देस भी आजाद होसी काई ? अर आजाद होसी तो गांव रो काई नक्सो होसी, पण आज लागे'के आजादी थोड़ासा'क लोगां न मिळी है बाकी तो आखो देस आजाद होय'र भी गुलाम है ।

मांगू : जरूरतआळा न आजादी कद मिली ? आज भी गांव में की लोग पूरे गांव न आपरी मुट्ठी में बंद राखणू चावै ।

सांवत : पण आ मनगत कद बदळसी ?

मांगू : बदळसी क्यूं ? बदल्या लोग खावै काई ? आज चाये कोई गांव में रैवै या जाये कोई जिम्मेदार पद न संभालतो हुवै सगळा रो ध्यान आपरै बैक वेलेंस अर आपरी सुविधा मे है अर आ सुविधा जद ई' मिळ सकै जद आपां की रा बाजिव हकां न मारां अर खुद री हैसियत नै, ई' रूप में परगट करा'क सामसो नाक रगड़बा लग ज्यावै ।

सांवत : (बात न गैराई सूं मैसूस करतो) आ बात तो मानगजोग है । हकां री लडाई अंधेजां सूं ही । हक मिलग्यो तो उण रै माफिक काम करणू चाये । नाक रगड़णू तो पछै आजादी रो उत्तो हुयो ।

मांगू : आज तो सा, नाक नै रगड़णू अर मोकासारु कटावणू भी जरूरी है । नाक रा घणी आपरी भू'पडी में रेवो, जे धाने की काम करावणू है तो डंग सूं नाक रगड़वो सीखो-लम्बो लम्बो रगड़णू अर जगां-जगां रगड़णू ।

सांवत : जणां तो आजादी मिली, पण नाक कटग्यो ।

मांगू : म्हारै विचार सूं तो ओ सोवणू ठीक है ।

सांवत : (थोड़ी मजाक करतां थकां) हां ओ नाक ई तो भगई री जड़ है ।

मांगू : आज भी है ।

सांवत : दुनियां रा सगळा युद्ध ई' नाक नै लेय'र हुया ।

मांगू : म्हारै खयाल सूं तो आज भी सगळी लड़ाई नाक री है । अं केम-मुकदमा अर ताव तोरा नाक रै वास्तै है ।

सांवत : हां, टांग कट्योही चस सकै है पण नाक कट्यां सोवणू कट ज्यावै ।

चोथो दरसाव

[आमली रो गट्टो । दगत दोफारां । तासपत्ती री बैठकवाजी । विरजू भर दुरगो ऊंकार अर निजामू साथी । टुवन्टी एट रो खेल, च्यारवां रँ ओळी-दोळी मन्नो खाती, दयालजी, रामसिंह, रामू अर आबर बैठ्यां है । की छोटा टावर ई आपरो पूरो ध्यान तासपत्ती में लगा राख्यो ।

मांगू, मदन अर गिरवर भी आ ज्यावँ । थोड़ी ताळ आपस मे बतलावँ पछे पिरथी भी आज्यावँ । थोड़ी चुस्की लगाया । पिरथी भी बां री बाता में ध्यान लग लेवँ । पछे गिरवर कँवै ल्यो मड ज्याय अके बाजी । रामू नै कँयर मांगू धरा मू तास मगावँ अर पछे चारू जणा बोरी बिछा'र बैठ ज्यावँ । पिरथी टुवन्टी एट रँ पत्ती छांटण लागी । पिरथी अर गिरवर, मदन अर मांगू आर्म-सार्म बैठ'र सीर बसै । केई दूजा छोरा ई उणां कन्नै आय'र बैठ ज्यावँ ।

पिरथी : (हाथ में पत्ती लेम'र) बोलो सरत काई ?

मांगू : सरत ?

पिरथी : हार-जीत री सरत तय करल्यो ।

मांगू : करल्यो ।

पिरथी : करो-आपां तो सरत सूं खेलण-आळा हा ।

मदन : तो सरत बतावो ?

पिरथी : सरत आपणै तो बोलल री है ।

मांगू : बोलल पीसी कुण ?

पिरथी : मिल्यां तो कोई छोई कोनी, ह'यो सै ई गांव में घरमाना री कमी नी ।

मदन : तो ठीक है बोलल अठरी अठे मंगाणी पड़गी कदे पूछ दवार रँ हट ज्यावो ।

पिरथी : अरे जा गैली । कदे हट्या हां काई ? (हाथ जेब रँ मांय घाल'र रो नोट सगळा रँ सार्म पटकतो ह्यो) ल्यो अगाऊ जमा करल्यो रँ बिश्वास नी हुवँ तो ।

गिरवर : ओ बिस्वुस ठीक है । (मदन कानी देख'र) अब दस री पत्ती बे म काडो बाबूजी ।

- मदन : (जेब मांय मूँ दम री नोट काड़तो हूयो) ल्यो सा दम री पत्ती ।
(सगळा हंसै)
- पिरथी : अब घामो मजो । मरत बिना ताम खेतणूँ टाइमपाम करणूँ है ।
- मांगू : तो यार घापां नै टाइम ई तो पाम करणूँ है ।
- पिरथी : ना । घापां टाइमपाम आळा खिलाडी कोनी । टाइम है की ? बग्ने ।
- मांगू : म्हु मा, अँ तो मरकारी नौकर है—बिजी है बिजी ।
- पिरथी : सरकारी नौकर बिधा कोनी । रोडवेज चालक हा घर तंमीलदार जती तनखा पावा हा । (पिरथी ताम पोम'र ब्यार-ब्यार पत्ती बाटणूँ सुरु कर देवै)
- मांगू : म्हु भाई, ओ तो ईँ देस रो हान है । इन्द्रवर तंमीलदार री तनखा लेणूँ चावै घर तंमीलदार कलेक्टर री तनखा लेणूँ चावै । (सगळा घाप घाप री पत्ती देखवा लाग ज्यारवै)
- पिरथी : तनखा नी उठाया अँ दम री पत्ती आबै बटा मूँ ?
- मांगू : आबै जकी तो म्हुनै ठा है ।
- मदन : ऊपरी कमाई है ।
- गिरवर : आज कमाई ई रो मतलब, ऊपर री कमाई मूँ है । तनखा ना रोटी कपड़ा ताई है । बाकी बचत है ऊपर री कमाई मूँ ।
- पिरथी : अरं ऊपर री कमाई है जणा ई बाया रें बाबू घाम्या है नीतर घाली कोई दूसरो ।
- मदन : खैर, छोड़ी घा बाता नै । अब कोनो ।
- गिरवर : मोठा ।
- मदन : बीस ।
- गिरवर : छोड़ूया ।
- पिरथी : इक्कन ।
- गिरवर : भिडनाई ।
- पिरथी : घोर पछे बाई ? घापा नै लो मीट मेका है घर दम री पत्ती खाणी है ।

मदन : म्ह भाई रोडवेज चलावै है अर डाका मारे है ।

पिरथी : (हन्को गुस्मो दिखावतो) जा मूदसी, तन्नै काई ठा । डाका प्राज सगळें पडै है । कुण सो दफतर अर कुण सो अफसर-डाका सून दूर है । छोड़ो डाका अर मारो फाका । (हँसण लागै)

मांगू : जणा भाई धाने तो आदत है ।

पिरथी : म्ह धाने भी सोक्यू सिपा देस्यू ।

गिरवर : क्यों, अब आबो नीचा नै (हुकम रो गुलाम चालै)

पिरथी : हूँ ।

गिरवर : क्यूँ ?

पिरथी : (हंस'र) ठीक है द्यो दारी का कँ ।

मांगू : देख बोलेगो नी ।

पिरथी : ईं में काई बोल दियो ?

मदन : बस रैवण दे—इसारावाजी नी चलैली क्यूँक सरत है ।

पिरथी : (हंस'र आपरी पतया कानी देखे) घो हो सरत है जणा ई तो इसारावाजी जरूर है (थोड़ी आख टमकार देवै)

मदन : जणा ई तो तेरै साथ कोई खेलै कोनी ।

पिरथी : क्यूँ ?

मांगू : तू बार सो बेईमानां रो अके बेईमान है ।

पिरथी : बेईमान सगळें है । म्है खुगला भगता नै चोखी तरिया जाएँ हूँ । (मदन मांगू अर पिरथी आप-आप री पत्ती नाख देवै)

पिरथी : तो सात आया । (हत्थो उठा लेवै)

मांगू : देख, पोइन्ट गिणैगो नी ।

पिरथी : क्यूँ ।

मदन : मनमें गिणी ।

पिरथी : ठीक है । आं नै म्है जाएँ हूँ—अ तो रुंगस खाणा है ।

मांगू : तेरै सून भी घणा काई ।

मदन : रुंगस बिना पार कोनी पड़ै ।

पिरथी : रुंगस सून ईं काम चालै है दुनियां रो । ईमानदार तो बापड़ा मँहरी बण्पा वणी मे बैठ्या है ।

मांगू : टेम-टेम गी बात है ।

पिरथी : टेम आ ई चोखी है—करले सो काम बाकी सब.....।

- मदन : मममाया धारी नीन ।
- पिरथी : नीन तो मरारी बू — दुनिया की मममो है तो दुनिया देग'र नीन बदलो है ।
- गिरवर : मरो पायो पाय । ये तो दुनी बानी पणी करो ।
- पिरथी : छो ई तो मजो है ।
- मदन : मजो तो हम की पनी मे है ।
- पिरथी : मायो बही (हम'र) घर' चा अजंत ने लिया चिडी की छाछ दोस' ही दिया ई अने तो भाया हम की पनी होम है ।
- मदन : हम की पनी कुण ने उयाबा दे है ।
- मागू : हा, पायो ।
- गिरवर : हरी छो पान को मुनाम ।
- पिरथी : ब ह । भईहा । जणा तो मा की मुरड है काठ देखू ।
- मागू : मुरड तो है काठमा घर दन की पनी लेस्या । (सगळ' हनण लागे)
- मदन : छो है रग (हाथ की पया मू रग दिखार्थ) घर इक्क' मू काठ लंबे ।
- मागू : घर छोटी मू' बाट्यो ।
- मदन : धोडा ठंगे ।
- मदन : हा, रग भी तेरो है ।
- पिरथी : कर होनी ना रबदळ । अब थे वपू' बोलो । पण मोको कोई कोनी चूक । चूक सो मूरख — मायर कंग्या ।
- मागू : धार' कान मे कंग्या काई ?
- पिरथी : कान मे वपू' । बें तो डूंगर माथे लह'या होय'र बोल्या है । अब कोई नी मुण' तो था ने काई दोस ।
- गिरवर : होम करमा नै ।
- मागू : बिल्कुल ठीक । बलजुग मे तो करमा नै ई दोम है । पोखो बरे सो पछतावे घर बुरो करे मो मोज उदावे ।
- गिरवर : मा ई है ।
- पिरथी : होगी रे गेलो ।
- मागू : भाई छात्र है तो आई ।
- पिरथी : जणा वपू' भलाई मे टाट कुटाई ? पाने कुण सो भगवानदाम बाबो

कहानी हो । (पिरथी हल्की उदासता से बोरी मान बजाऊँ गता है मोने
अर गोदगा ने मन में दिगंबर हल्के ने धारने मासे रग नेने ।

पिरथी

भादरा बसन्त बसने गो है, ने लोगगो मुनाम भी मामे तो करदे
जिसगी ।

गिरधर

अ, छाःपां (मुनाम मामे) कं गो भेमां भेददा मे अर कं धोरा
निपा लेप ।

पिरथी

(मृग होकर) छरे वा मेरा मापी । धोर कटे है ? (इमारो करे)

मांगू

धोर तो उठने माया बेटया है ? (हसन मामे)

पिरथी

अरे जा मुगळ ।

मांगू

: रोडवेज में तू बोरी बोनी करे काई ?

पिरथी

: बोरी ?

मदन

: बोरी है... मोरी में बोरी (हर्ग)

मांगू

: हा (हसन मामे)

पिरथी

: छरे वा बोरी बोनी, वी ने इहे बयाई माना ।

मांगू

: हा, एक तो नाव में बहलया । मुरे बामा ने धोगा नाव दे दिया
पण माय ने....(इमारो करे)

पिरथी

: (मजाक करती) माय ने सगळा बरोबर है ऊपर मूं सगळा ।
भ्यारा-भ्यारा नाव है कोई साकी धरे कोई वेन्ट-बुसटं धरे तो को
सादी धरे ।

मदन

: तू चाल धार ।

पिरथी

: पाला हा, ईया तू धोपळ मत कर ।

मदन

: धोपळ तो धोड़े है ।

पिरथी

: पकड़ो ।

मांगू

: पकड़ें कुण ?

पिरथी

: आ भी साची । भूहारे तो रोडवेज में पनाइंग हुवे ।

मांगू

: पनाइंग ने कुण पकड़ें ?

पिरथी

: इंधा पकड़्या पछे काम किया चालें ।

मांगू

: अरे धार धो काम चालणूं काई है । हरेक जणूं धा ई कैवे—काम
नी चालें । तो काई बेईमानी मूं ई काम चालें ।

पिरथी

: बेईमानी मूं आराम मूं चालें ।

- मदन : ३७ भाई । बत्तो धाराम मूं बोन्यो है जिया बेईमानी तो रोटी रे गाय गइयो ।
- गिरथी : अब गमइयो गहारनो पोइन्ट ।
- मांगू : पोइन्ट नो गगइया ममम राग्या हां ।
- गिरथी : घरं पइया बाईं हुवें, गुण्यो कोनी ।
- मांगू : नृ गुण राग्यो है ना ।
- गिरथी : नै नो हा ही ।
- मदन : नहीं, घठं ओर भी बेई हैं ।
- गिरथी : (मममनो हयो) गहनं बा मे क्यूं गिरं ?
- मांगू : गिरं कृण ? दुनिया कैंव है ।
- गिरथी : दुनिया बावळी है ।
- मांगू : जद ई थां जैहा रा दाव लागराख्या है ।
- गिरथी : दुनियां बावळी कोनी स्याणी है ।
- मांगू : स्याणी है, जणा आपरा टावर पळें है नीतर भठं थोळमदारा री कमी है बाई ? भर्योड़ी बन्दूक लिया डोलें है ।
- मदन : (गिरथी कानी देख'र टेक मूं) तू कृण मूं कम है ।
- गिरथी : (थोडो मावमान होय'र) अब देख अपोपड़ तो करं मना । तेरी सारी खाल गै जाणूं हूं । तू दुनियां नै उल्लू बनावें पण, गै बणूं कोनी ।
- मदन : बिणनै उल्लू बनायो, बता ? (पट्टी सामर'र पूछण लागें)
- गिरथी : छोड़ ! अवार पोल खोलसूं तो मूंओ बड़कृत्या सो हो ज्यासो । (मदन रे बेरं पर थोडो गुस्सो)
- गिरथी : घरं भाया ये सडो हो या खेसो हो ?
- मांगू : जूवा में तो सड़ाई होसो ।
- गिरथी : जुआं कृण खैंलें ?
- मांगू : ओ जुआ ई है—दस री पत्ती मूं आपां खेल रैया हां । पछें जूओ बाईं हुवें है ?
- गिरथी : (गिरथी नै गुस्सो आवें घर वो नीचें ई आपरी पत्ती नांस देवें) छोडो जणां, घरं जिस्या रे साथ खेलणूं, माटी छिनाणूं है ।
- मांगू : त्यो आ जबरदस्ती ।

मदन : हार दिखाई ना । ओ सदा रोली करै ।

पिरथी : (गुस्से में) म्हे ईमानदारी रो ठेको तो थे ई ले राख्यो है ।

मांगू : छोड़ो, आयगी भीट (आपरै हाथ सूँ पत्ती नाख देव, पछे मदन घर गिरवर भी पत्ती नाख देव । पिरथी फटाफट पत्तों न सामट केव)

पिरथी : दुनियां मटी घणी होसियार होगी ।

मांगू : कुण ती दुनियां ?

मदन : थारा जैडा लोगां री ।

पिरथी : म्हे काई दुनियां सूँ अलग हां ।

मांगू : अलग तो हो ई । थारो अलग पंय, अलग ढंगवालो घर मन कारनामा ।

पिरथी : देख म्हेन आवै है गुस्सो । झूठी बात म्हे तो आज ताईं बरो न घर ना कदै सुणुं ।

मदन : (व्यंग में) म्हे ?

मांगू : म्हे जी, ये तो मनवादी पुण्ना रा अवतार हो । आ घरती थारै कारण ई टिकरी है नीतर आज ताईं नोन हो ज्यानी ।

पिरथी : थारो ! बड़ा उस्ताद हो । म्हे इम्हो काई बिगाड़ दियो जागे नेपण लाग्या जद सूँ म्हेन भांड रैया हो ।

मदन : बिगाड़्या, डागझाळा घोटी मरग्या ।

पिरथी : म्हेन भाया तू आज बिल्नी घाडी लेव'र आयो है ।

मदन : म्हे तो आज ही घाडी लेव'र आयो हूँ—पण तू मदा घाडी लेव'र चाल्यो ।

मांगू : ईं गाव मे तो घणा जणा बिल्नी घाडी लेव'र चानै ।

मदन : वैं बां रै मूण है—इराबो, घमकाबो, जोर दिमाबो, उम्नु बगारो, सोगा नै भिडाबो घर मौज उड़ाबो ।

मांगू : बाहू भाई, गाव घर गाव रा मोळमदारो । पीबो, माथो घर मौज उड़ाबो ।

पिरथी : ये की ई कंबो—थारा का थोड़ा तो दयां ई मैदान मे दोड़्यो ।

मदन : थोड़ा रैया है ।

मांगू : जना ई म्हे कंब रैया हा, झूठी थोड़ी कंबा हा ।

खर : (ऊठ'र) खो उठो नीतर छँ मू ड फूटमी । खो ई माव रो पाग
 है । क्या जणा बँटो घर पछे लड'र उठो । (खार उठ ग्याई घर
 झाँकड लोहवा लागै)

मांगू : जै हो जमाना रो ।

मदन : जै हो गोळमदारा रो ।

मांगू : जै हो भादगमिया रो ।

मदन : जै हो बीकडमिया रो ।

(खार हंसता हुआ चल्ता जाई)

(धीमे-धीमे चन्दाकार)

